स्वामी दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

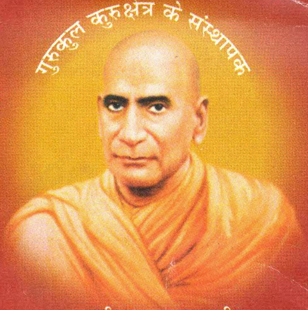

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

आश्विन वि. स. 2077 • कलियुगाब्द 5118 • वर्ष : 06 • अंक : 06 • जून-सितम्बर 2020

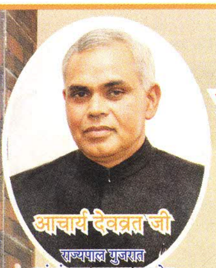

आचार्य देवव्रत जी
राज्यपाल गुजरात
एवं संरक्षक गुरुकुल कुरुक्षेत्र

सीबीएसई की परीक्षाओं में गुरुकुल के छात्रों ने मचाया तहलका

मोहित ने 98.4 प्रतिशत अंकों के साथ किया जिला टॉप

राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने समस्त गुरुकुल परिवार को दी शुभकामनाएं

गुरुकुल के 10वीं में 229 एवं 12वीं में 171 छात्रों की मैरिट

परीक्षा
परिणाम
विशेषांक

स्वामित्व :

AN ISO 9001:2015 CERTIFIED INSTITUTE

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744–238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

No. 1 Residential School Of Haryana By Education World

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर गुरुकुल परिसर में पौधारोपण करते हुए प्रधान कुलवन्त सैनी जी व अन्य अधिकारीगण

सी.बी.एस.ई. की 10वीं परीक्षा में 90% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 161 विद्यार्थी

मोहित 98.4% | हर्ष राणा 98% | रवि रंजन 97.6% | प्रभात 97.4% | अंश चौधरी 97.4% | विवेक 97.2% | शुभम 97.2% | रोहन 97.2% | दिव्यांशु राज 97.2% | सुमित्र 97% | सौरभ राज 97% | हर्षवर्धन 97% | दीपक 97% | अमिताभ 97%

अमित गुप्ता 97% | स्वप्निल 96.8% | हर्ष 96.8% | विवेक 96.6% | अनुभव 96.6% | विशाल 96.4% | प्रिंस 96.4% | निखिल 96.4% | वासु चहल 96.2% | सार्थक 96.2% | अभिषेक 96.2% | प्रियांशु 96% | हर्ष बांकुरा 96% | वासुन 95.8%

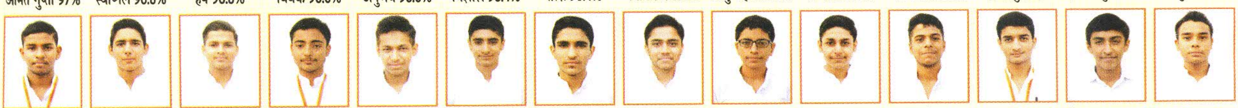

साहिल 95.8% | राहुल 95.8% | मौसम 95.8% | आयुष 95.8% | अमृतराज 95.8% | अमन नंदल 95.8% | अभिनव 95.8% | प्रियांशु 95.6% | ध्रुवदेव 95.6% | अमन 95.6% | सिद्धार्थ 95.4% | प्रशान्त 95.4% | कुंवर प्रशान्त 95.4% | कुनाल 95.4%

ध्रुवपाल 95.4% | अनुराग 95.4% | अनुज 95.4% | यश 95.2% | सुमित 95.2% | शिवम 95.2% | पर्व गर्ग 95.2% | जयन्त 95.2% | अंकित 95.2% | अमन 95.2% | अभिषेक 95.2% | अभय 95.2% | शिवांग 95% | चन्दन 95%

आयुषराज 95% | अतुल 95% | आशुतोष 95% | अजय 95% | सत्यम 94.8% | रोहन 94.8% | राजकुमार 94.8% | मनीष 94.8% | लोकेश 94.8% | बृजेश 94.8% | अमन 94.8% | आकाश 94.8% | उमंग 94.6% | रोहित 94.6%

रविन्दु 94.6% | मोहनीश 94.6% | दिव्यांश 94.6% | प्रथम 94.4% | लोकेश 94.4% | आशीष 94.4% | अमितराज 94.4% | विवेकानन्द 94.2% | प्रभुनारायण 94.2% | शौर्य मिश्रा 94% | राहुल 94% | अभयनूर 94% | नीरज 93.8% | ललित 93.8%

देववर्धन 93.8% | भानु 93.8% | शान्तनु 93.6% | गीतांशु 93.6% | अंकित 93.6% | हिमांशु 93.4% | आर्यन 93.4% | अमनदीप 93.4% | रूद्र चौहान 93.2% | प्रियांशु 93.2% | नवदीप 93.2% | हरदीप 93.2% | दीपांशु 93.2% | दीपक 93.2%

आदित्य 93.2% | शिवम 93% | रोशन 93% | प्रियांशु 93% | नितिन 93% | ऋतिक 93% | दिव्यांशु 93% | विशेष 92.8% | विशाल 92.8% | सौरभ 92.8% | मयंक 92.8% | आदर्श 92.8% | अभिनीत 92.8% | उल्लास 92.6%

सिद्धार्थ 92.6% | हार्दिक 92.6% | चिराग 92.6% | शौर्य 92.4% | वासु 92.4% | उत्पल 92.4% | शैर्य 92.4% | नवीन 92.4% | देवांश 92.4% | अमन 92.4% | साहिल 92% | नवदीप 92% | अनुज 92% | विजय 91.8%

सुनिर 91.8% | ललित 91.8% | आर्यन 91.8% | रवि रंजन 91.6% | राघव 91.6% | आकाश 91.6% | गजेन्द्र 91.4% | अंकुश 91.4% | राजकमल 91.2% | यशविनय 91% | सौरभ 91% | केशव कुनाल 91%

यश 90.6% | राहुल 90.6% | लोमेश राज 90.6% | आयुष 90.6% | अनुज 90.6% | रोशन 90.4% | मुकुल 90.4% | अंकितराज 90.4% | हिन्दुत्व 90.4% | आशीष 90.4% | सोनू 90.2% | प्रतीक 90.2%

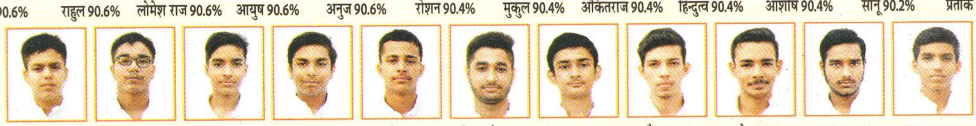

हर्ष 90.2% | अश्वनी 90.2% | अनुभव 90.2% | आयुष 90.2% | सूर्यांशु 90% | सिद्धार्थ 90% | शुभम 90% | सौरभ 90% | प्रवेश 90% | अभय 90% | आकाश 90%

ओ३म्

11|9|20

गुरुकुल दर्शन

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

'सम्पादक परिवार'

संरक्षक : आचार्य देवव्रत (महामहिम राज्यपाल, गुजरात)
मुख्य संपादक : कुलवंत सिंह सैनी
मार्गदर्शक : विश्वबंधु आर्य
प्रबंध-संपादक : शमशेर सिंह
सह-संपादक : आचार्य सत्यप्रकाश जी
सूबेप्रताप आर्य
राजीव कुमार
कानूनी सलाहकार : राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकार : सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक: राजीव कुमार आर्य
वितरण व्यवस्थापक: राजीव कुमार
: अशोक कुमार

आवश्यक सूचनाएं

1. **'गुरुकुल दर्शन'** मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

– संपादक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	कोरोना वायरस को कैसे हराएं?	02
2.	गुरुकुल समाचार	03
3.	गुरुकुल समाचार	04
4.	सुख-समृद्धि हेतु किसान प्राकृतिक कृषि को अपनाएं	05
5.	शब्दों की अद्‌भुत शक्ति	06
6.	क्या आप डिप्रेशन में हैं?	07
7.	शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कैसे बढ़ाएं?	08
8.	पाखण्ड का खुलकर करें विरोध	09
9.	नई शिक्षा-नीति	10
10.	स्वयं रखे अपने स्वास्थ्य का ध्यान	12
11.	ब्रह्ममुहूर्त में क्यों जगे	13
12.	राम मंदिर निर्माण का ऐतिहासिक क्षण	14
13.	कोरोना से बचने के लिए यज्ञ करें	16
14.	क्यों करें सत्कर्म?	18
15.	क्यों पढ़ी जाए संस्कृत?	19
16.	महर्षि दयानन्द का सपना और आर्यसमाज	20
17.	कैसे करें दुधारू पशुओं की देखभाल?	22
18.	गिलोय : औषधि नहीं वरदान	23
19.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

संपादकीय

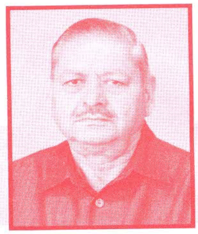

कोरोना वायरस को कैसे हराएं?

आज समस्त विश्व कोरोना महामारी की जकड़ में हैं। संसार भर के लगभग दो करोड़ लोग इसके शिकार बन चुके हैं। अकेले भारत की बात करें तो यहाँ भी कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा 35 लाख को पार कर चुका है। हार्वर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ के डेविड रोपिक का कथन है कि अभी तक ऐसी कोई महामारी नहीं आयी जो इतनी शीघ्रता से फैली हो, 1917-18 की इन्फ्लुएंजा महामारी भी नहीं। कोविड-19 मुख्यत: शरीर के प्रश्वसन तन्त्र पर प्रहार करता है और उसी से संबंधित लक्षणों जैसे खांसी, जुकाम और बुखार आदि को जन्म देता है। यह संक्रमित व्यक्ति के स्पर्श से तो प्रसारित होता ही है, सबसे अधिक खतरा उन जल बिन्दुओं से होता है जो खांसी अथवा छींक के माध्यम से संक्रमित व्यक्ति से बाहर आकर सामने वाले को दबोच लेते हैं इसीलिए मास्क पहनने की सलाह दी जाती है ताकि यह स्थिति न आने पाए। वायरस के आक्रमण से प्रत्येक व्यक्ति समान रूप से प्रभावित नहीं होता। कुछ में तो किसी भी प्रकार के लक्षण कभी भी उत्पन्न ही नहीं होते।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से जो नया निर्देश कोविड-19 को लेकर प्रकाश में आया है उसके अनुसार ऐसे लोग संक्रमित करने की भी क्षमता नहीं रखते और उन्हें एकांतवास की आवश्यकता भी नहीं होती। कुछ अन्य में जिन्हें पूर्व-लक्षण वाले शिकार कह सकते हैं, संक्रमण के कुछ समय पश्चात् लक्षण उत्पन्न होते हैं जबकि तीसरे प्रकार के व्यक्ति गंभीर रोगी की श्रेणी में आते हैं और उनमें संक्रमण होते ही तीव्रता के साथ लक्षण उत्पन्न होते हैं। बाद के दोनों ही वर्ग के लोग दूसरों को भी संक्रमित कर सकते हैं।

चूंकि वायरस अभी-अभी प्रकाश में आया है, अत: उसका औषधीय परिहार अत्यन्त कठिन है। उसे रोकने के लिए कोई प्रभावी वैक्सीन भी ज्ञात नहीं है। दोनों ही पर संसार की अनेक प्रयोगशालाओं में काम चल रहा है। औषधि और वैक्सीन के अभाव में विश्व के विभिन्न देशों को लॉकडाउन तथा सोशल डिस्टेंसिंग जैसी प्रक्रियाओं का सहारा लेना पड़ रहा है। शिक्षण संस्थान, कार्यालय आदि सब बन्द हो गये और सामाजिक दृष्टि से एक लम्बे समय तक मनुष्य अकेला पड़ गया है। इसके अपने दुष्प्रभाव उसके मानस पर पड़े हैं।

पंडित भगवत दयाल शर्मा हेल्थ साइंसेज विश्वविद्यालय, रोहतक तथा कतिपय अन्य चिकित्सा शिक्षण महाविद्यालयों के चिकित्सकों के अनुसार अकेलेपन, खालीपन और संक्रमण के अतिशय डर के कारण लोगों में अवसाद, मानसिक तनाव और चिन्ता विकास की समस्याएं उभरकर सामने आ रही हैं। फलस्वरूप, उनकी नींद बुरी तरह प्रभावित हुई और वे अनिद्रा के शिकार भी हुए हैं।

वर्क फ्राम होम संस्कृति का जागरण भी लॉकडाउन के कारण हुआ। कुछ ही समय में कर्मचारियों में इसने ऊब और तनाव को जन्म दिया। एक सर्वेक्षण में 82 प्रतिशत कर्मचारी कार्यालयों में लौटने को बेचैन दिखे। परिस्थितिवश उत्पन्न इन दुष्प्रभावों तथा महामारी के प्रतिकार के लिए औषधि और वैक्सीन के अभाव में सलाह दी जा रही है कि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जाए ताकि कोरोना महामारी का आक्रमण संभव ही न हो सके। इस स्थिति के लिए पहली शर्त है कि मनुष्य चिन्ता, घबराहट, दोषपूर्ण पाचन एवं नकारात्मक विचारों से दूर रहे। रोग प्रतिरोधी क्षमता के विकास में गहरी नींद भी आवश्यक है। इस क्षमता के विकास में शाकाहार भी सहायक होता है।

प्रतिरोधी क्षमता के विकास में विटामिन ए, सी और डी तथा जस्त का बड़ा महत्त्व है। भोजन में इन सभी की यथोचित पूर्ति करते रहना चाहिए। शाकाकार में विटामिन ए के श्रोत हैं गाजर, कद्दू, हरे साग एवं शकरकंद जबकि विटामिन सी के श्रोत हैं नींबू, संतरा, आंवला आदि खट्टे फल तथा विटामिन डी के हैं खिली हुई धूप, मशरूम की कतिपय किस्में आदि। भोजन में जस्त तत्त्व की प्राप्ति मेवों से हो सकती है। ये गोलियों के रूप में बाजार में भी उपलब्ध हैं।

घरेलु विधियों में नीम, गर्म पानी का सेवन, अश्वगंधा, गिलोय आदि प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ाने वाले हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली एवं जापान के सहयोग से हुए एक शोध में यह तथ्य उजागर हुआ है कि अश्वगंधा में विथैनोन नामक कार्बनिक यौगिक उपस्थित होता है जो वायरसों से संघर्ष करने में समर्थ है, हालांकि कोरोना वायरस पर यह कितना प्रभावी है, यह स्पष्ट नहीं है मगर इतना जरूर है कि कोरोना के प्रति रोग प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ाने में अश्वगंधा की प्रभावी भूमिका होती है।

हल्दी वाला दूध भी बहुत कारगर रहता है। लौंग, काली मिर्च, दालचीनी तथा अदरक भी इसमें प्रभावी समझे जाते हैं। आज मानवता निश्चित ही एक कठिन दौर से गुजर रही है परन्तु दृढ़ इच्छाशक्ति के दम पर अवश्य ही कोरोना पर जीत हासिल की जा सकती है।

- कुलवंत सिंह सैनी

सीबीएसई की दसवीं की परीक्षा में गुरुकुल का ऐतिहासिक परीक्षा परिणाम, सभी 229 छात्रों की मैरिट

गुरुकुल के ब्र० मोहित ने 98.4 अंकों के साथ जिला टॉप किया

ऐतिहासिक परीक्षा परिणाम पर राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने दी बधाई

कुरुक्षेत्र, 15 जुलाई 2020 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र छात्र मोहित आर्य ने दसवीं की परीक्षा में 98.4 अंक प्राप्त कर जिला टॉप किया है, वहीं सर्वश्रेष्ठ परीक्षा परिणामों की परम्परा को कायम रखते हुए दसवीं में भी गुरुकुल के सभी 229 छात्रों ने मैरिट प्राप्त की है।

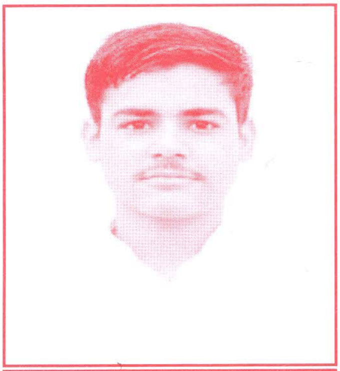

गुरुकुल का छात्र मोहित आर्य

ऐतिहासिक परीक्षा परिणाम से जहाँ गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह प्राचार्य शमशेर सिंह सहित सभी अध्यापकों का लड्डू खिलाकर बधाई दी वहीं गुरुकुल के संरक्षक व गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने भी समस्त गुरुकुल परिवार को दूरभाष पर बधाई दी है।

गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सैनी ने कहा कि युवा पीढ़ी में संस्कारों के साथ उत्कृष्ट परीक्षा परिणामों के लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र पूरे देश में अलग पहचान रखता है और गुरुकुल के अध्यापकों के कुशल मार्गदर्शन और छात्रों की कड़ी मेहनत की बदौलत साल दर साल गुरुकुल छात्र नये कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। उन्होंने ऐतिहासिक परीक्षा परिणाम पर सभी छात्रों व उनके अभिभावकों को भी बधाई दी है। निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता ने बताया कि दसवीं में गुरुकुल के 60 छात्रों ने 95 प्रतिशत से अधिक तथा 161 छात्रों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये है जो जिला में ही नहीं अपितु हरियाणा में किसी भी शिक्षण संस्थान का सर्वश्रेष्ठ रिजल्ट है।

विषयानुसार अधिकतम अंकों की बात करें तो गुरुकुल के 12 छात्रों ने गणित में, संस्कृत में 10 बच्चों ने, विज्ञान में 3 छात्रों ने 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। गुरुकुल के छात्र ब्र. मोहित ने गणित में 100, संस्कृत में 100, विज्ञान में 99, हिन्दी में 98 तथा सामाजिक विज्ञान में 95 अंक प्राप्त कर टॉप किया है। गुरुकुल के ही छात्र हर्ष राणा ने भी 98 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी गुरुकुल छात्र इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन करते रहेंगे।

इस अवसर पर गुरुकुल के सुबेप्रताप, परीक्षा नियंत्रक रमेश चन्द, सतीश कुमार, एन.सी.सी. अधिकारी कैप्टन श्रवण कुमार, मुख्य संरक्षक संजीव आर्य, प्रकाश जोशी, अनिल शास्त्री, आनन्द सिन्हा आदि सभी अध्यापकों ने प्रधान कुलवन्त सैनी व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता को भी बधाई दी और सभी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की भी कामना की।

सीबीएसई की 12वीं की परीक्षा में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के छात्रों ने रचा इतिहास

सभी 171 छात्रों की मैरिट, 81 छात्रों के 90 प्रतिशत से अधिक अंक

शानदार परीक्षा परिणाम पर राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने प्रबंधक समिति व अध्यापकों को दी बधाई

कुरुक्षेत्र, 13 जुलाई 2020 : अपनी उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए सीबीएसई की 12वीं की परीक्षा में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सभी 171 छात्रों ने मैरिट प्राप्त कर इतिहास रचा है, इतना ही नहीं गुरुकुल के 81 छात्रों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल करके एक नया कीर्तिमान भी अपने नाम किया है। वहीं गुरुकुल के छात्र राहुल केरला ने 97 प्रतिशत अंकों के साथ गुरुकुल टॉप किया है। शानदार परीक्षा परिणाम के लिए गुरुकुल के संरक्षक एवं गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने प्रधान कुलवन्त सैनी, निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, सह प्राचार्य शमशेर सिंह सहित समस्त अध्यापकों को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने कहा कि नैतिक मूल्यों और संस्कारों के साथ बच्चों के श्रेष्ठ परीक्षा परिणामों के दम पर ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र लगातार तीन वर्षो से हरियाणा का नंबर वन आवासीय विद्यालय है। अपने सर्वश्रेष्ठ परीक्षा परिणामों की बदौलत ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई है जिसका पूरा श्रेय यहाँ की प्रबंधक समिति, प्राचार्य एवं अध्यापकों के कुशल मार्गदर्शन और छात्रों की मेहनत को जाता है। परीक्षा परिणाम पर चर्चा करते हुए निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता ने बताया कि गुरुकुल के सभी 171 छात्रों ने मैरिट हासिल की वहीं 81 छात्रों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये हैं। उन्होंने बताया कि शारीरिक शिक्षा में गुरुकुल के 5 छात्रों ने 100 अंक, कला में 4 छात्रों ने 100 अंक तथा एन.सी.सी. में एक छात्र ने 100 अंक हासिल किये हैं। अंग्रेजी और गणित में दो छात्रों ने 99 अंक, अकाउण्ट में रमन ने 98 अंक, बिजनेस में पारस आर्य ने 98, संस्कृत में दीक्षान्त, अनमोल, तुषार तथा आशीष ने 98 अंक तथा भौतिक विज्ञान में आर्यन ने 98 अंक प्राप्त किये हैं। वहीं जीव विज्ञान में साहिल आर्य ने 97 अंक प्राप्त किये। रसायन विज्ञान में आशीष, अभिषेक, रोहित ने 96 अंक प्राप्त किये। ऐतिहासिक परीक्षा परिणाम पर प्रधान कुलवन्त सैनी ने सभी अध्यापकों का लड्डू खिलाकर मुंह मीठा कराया। इस अवसर पर गुरुकुल के मुख्य संरक्षक संजीव आर्य, अध्यापक रमेश चन्द, एन.सी.सी अधिकारी श्रवण कुमार, आनन्द सिन्हा, डीपीई देवीदयाल, राहुल कुमार, अशोक जोशी, सुनील कुमार, कम्प्यूटर टीचर रमन व संदीप कुमार आदि उपस्थित रहे।

प्रिय पाठकों !

*लोगों की भावनाओं का सम्मान और उनकी भारी मांग को देखते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने विभिन्न प्रकार की बाथ शोप की पूरी रेंज तैयार की है जो गुरुकुल के मेन गेट के सामने स्थित '**प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र**' पर उपलब्ध है।*

*गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा निर्मित **एलोवेरा, तुलसी, गुलाब व नीम की साबुन** 100 प्रतिशत शुद्ध एवं मिलावट रहित है।*

सम्पर्क सूत्र

8689002812, 9996026314, 15

सुख-समृद्धि हेतु किसान प्राकृतिक खेती को अपनाएं

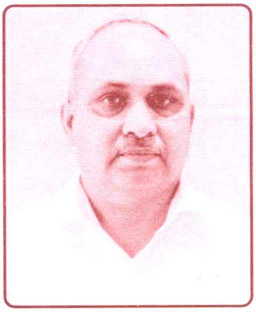

शमशेर सिंह

वर्तमान समय में भागदौड़ भरी अति व्यस्त दिनचर्या और विषैले खाद्य पदार्थों के सेवन के चलते लोग विभिन्न प्रकार के रोंगो से ग्रस्त हैं। पुराने समय में व्यक्ति 100 या इससे भी अधिक काल तक जीवित रहते थे, इसके पीछे उनके खानपान का विशेष महत्त्व था। पुरानी कहावत भी है- सादा खाणा, सादा बाणा अर्थात् साधारण भोजन और साधारण वेषभूषा, परन्तु आज न तो हमारी वेशभूषा ही सादी है और न ही हमारा भोजन। खानपान की सभी वस्तुएं जहरीली हो गई हैं, हैरानी की बात यह है कि हमारे खाद्य पदार्थों में विष घोलने वाला कोई और नहीं बल्कि हम स्वयं ही हैं और इसके दुष्परिणाम भी हम नये-नये रोगों के रूप में भुगत रहे हैं। विषरहित भोज्य पदार्थो और भयंकर रोगों से बचाव का एकमात्र विकल्प है - 'कम लागत प्राकृतिक कृषि'।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी की गरिमामयी उपस्थिति में हरियाणा मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल जी द्वारा 'कम लागत प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण-केन्द्र' का उदघाटन किया गया। इस अवसर पर हरियाणा के विधान सभा अध्यक्ष ज्ञानचन्द गुप्ता, कृषिमंत्री जे.पी. दलाल, बिजली मंत्री रणजीत चौटाला, खेलमंत्री संदीप सिंह, परिवहन मंत्री मूलचन्द शर्मा सहित अनेक विधायक भी मौजूद रहे। लगभग 2 करोड़ की लागत से बना प्राकृतिक कृषि का यह प्रशिक्षण केन्द्र निश्चित तौर पर देश व प्रदेश के किसानों के लिए मील का पत्थर साबित होगा क्योंकि रासायनिक खाद और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग के चलते किसानों की हालत दयनीय हो चुकी है।

फसलों से अधिक लाभ लेने के लालच में फसलों में रासायनिक खाद व कीटनाशकों का अधिकाधिक छिड़काव कर किसान न केवल आर्थिक तौर पर कमजोर होता है बल्कि इन रासायनिक खाद व कीटनाशकों से तैयार अन्न, फल व सब्जियों के सेवन से लोग बीमार पड़ते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो आज हम भोजन के रूप में धीमा जहर खा रहे हैं, जो हमें धीरे-धीरे मृत्यु तक पहुँचा देता है। यही नहीं फसलों के अवशेष मिटाने के लिए किसान खेतों में आग लगा देते हैं इससे न केवल खेत में उपस्थित जीव-जन्तु मारे जाते है बल्कि भूमि की उर्वरा शक्ति भी प्रभावित होती है वहीं इस आग के कारण वायुमंडल में धुआँ फैल जाता है जो वायु को दूषित करने के साथ-साथ कई तरह के रोगों का कारण बनता है। ऐसे में रासायनिक खाद से की जाने वाली खेती हमेशा नुकसानदायक है, इससे बचने के लिए हमें 'कम लागत प्राकृतिक कृषि' को अपनाना होगा।

गुरुकुल में स्थापित 'कम लागत प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण-केन्द्र' में किसानों को प्राकृतिक कृषि के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी दी जाएगी। साथ ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा 180 एकड़ में स्थित प्राकृतिक कृषि क्षेत्र का दौरा करवाकर किसानों को प्राकृतिक कृषि के उत्पादन और फसलों की गुणवत्ता को देखेंगे। प्राकृतिक कृषि से न केवल किसान आर्थिक रूप से समृद्ध होगा बल्कि इससे देशी गाय की दशा में भी सुधार होगा क्योंकि प्राकृतिक कृषि में खाद की बजाए देशी गाय के गोमूत्र और गोबर का प्रयोग किया जाता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस पद्धति से खेती करने के लिए किसान को बाजार से कुछ भी लाने की आवश्यकता नहीं पड़ती केवल घर में उपयोग होने वाली वस्तुओं से ही खाद और कीटनाशक तैयार कर खेत में डाले जाते है और जो गाय दूध देने लायक नहीं होती, उनका गोबर और गोमूत्र प्राकृतिक कृषि के लिए अधिक लाभकारी होता है।

गुरुकुल के संरक्षक एवं गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी का उद्देश्य है कि देश व प्रदेश के किसानों को अपनी पारम्परिक प्राकृतिक कृषि के लिए प्रेरित कर जहरीले होते खाद्य पदार्थों और बंजर होती धरती माता को बचाया जाए। देश के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भेंट कर महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने जब गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 'कम लागत प्राकृतिक कृषि' मॉडल के बारे में बताया तो उन्होंने केन्द्रीय कृषि मंत्री गिरिराज सिंह सहित अन्य सांसदों के प्रतिनिधि मंडल व कृषि वैज्ञानिकों को गुरुकुल का दौरा करने हेतु भेजा। गुरुकुल के कृषि क्षेत्र को देखकर केन्द्रीय मंत्री सहित सभी कृषि वैज्ञानिक आश्चर्यचकित रह गये और गुरुकुल के कृषि क्षेत्र की खूब प्रशंसा की। यही कारण है कि गुरुकुल में 'कम लागत प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण-केन्द्र' की स्थापना की गयी। किसान भाइयों से मेरा अनुरोध है कि एक बार गुरुकुल के 'प्राकृतिक-कृषि फार्म' का दौरा अवश्य करें और देशहित में जहरीली खेती को छोड़कर 'कम लागत प्राकृतिक कृषि' करने का संकल्प लें।

- शमशेर सिंह
सह प्राचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

शब्दों की अद्‌भुत शक्ति

आचार्य सत्यप्रकाश जी

मन्त्र में अद्‌भुत शक्ति होती है, लेकिन मेरी यह बात केवल वही लोग समझ सकेंगे जिन्होंने मन्त्र शक्ति की विलक्षणता का या तो अपने जीवन में अनुभव किया है या फिर शास्त्रीय व धार्मिक दृष्टि से विश्वास करते है। कई बार मुझे ऐसे लोग मिल जाते है जो मन्त्र जप को बकवास बोलते है। मन्त्र जप को समय की बर्बादी बताते है। अपनी बात शुरू करने से पहले मैं एक दृष्टान्त के माध्यम से ऐसे महानुभावों की गलतफहमी को दूर करना चाहूँगा :-

एक बार महर्षि दयानन्द जी शब्द शक्ति पर चर्चा कर रहे थे। तभी सभासदों में से एक व्यक्ति झुँझलाता हुआ खड़ा हुआ और बोला -'स्वामीजी ! फालतू की बकवास मत कीजिये। शब्दों को बकने से कोई शक्ति की उत्पत्ति नहीं होती।'

उस व्यक्ति की ऐसी बात सुनकर स्वामीजी पहले मुस्कुराए फिर क्रोधित होकर बोल -'नासमझ, मूर्ख ! शब्द शक्ति के बारे में तुझे पता ही क्या है ?'

इतना बोलना था कि वह व्यक्ति गुस्से से लाल हो गया और तमतमाकर बोला -'स्वामीजी ! संत होकर आप गुस्सा कर रहे हो और मुझे मूर्ख बोल रहे हो। क्या यही आपका सन्यासी धर्म है ?'

अब स्वामीजी शांत हो गये और प्रेम से बोले -'भाई ! नाराज क्यों होते हो, मैंने तो केवल दो शब्द ही बोले है। उसमें तुम्हारी ये हालत हो गई, जरा सोचो जिस मन्त्ररूपी शब्द में प्रेरणाओं, भावनाओं का गुंजन भरा हो, उसकी शक्ति कितनी होती होगी ?'

स्वामी जी की यह बात सुनकर उस व्यक्ति को अपनी गलती समझ आ गई और वह चुपचाप बैठ गया ।

शब्द ही तो है, जिसके साथ विभिन्न भावनाएँ और प्रेरणाएँ जुडी होती हैं। शब्द पर ही सवार होकर विचारों का आदान-प्रदान होता है। आपके शब्द ही हैं, जो किसी को आपका दोस्त तो किसी को जानी दुश्मन बना देते है तो किसी को आपका आत्मीय बना देते है अत: शब्द शक्ति और मन्त्र शक्ति पर कभी संदेह न करें।

गायत्री मन्त्र की शक्ति

गायत्री मन्त्र सद्‌बुद्धि का मन्त्र है जिसमें ऐसी विलक्षण सामर्थ्य है कि यह उपासक के हृदय और मस्तिष्क पर आश्चर्यजनक प्रभाव डालता है। इस महामंत्र का नित्य- निरंतर जप करने से अंत:करण की गहराई में जड़े जमायें बैठे कुविचार यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या और द्वेष आदि उखड़ना शुरू हो जाते हैं। इसके विपरीत धैर्य, आत्मविश्वास, साहस, निर्भयता, सूझबूझ, परिश्रमशीलता, नियमितता और शांति जैसे सद्‌गुणों की नित्य निरंतर अभिवृद्धि होती जाती है ।

अगर सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये तो संसार के समस्त दु:खों की जननी अविद्या है। बेईमानी, झूठ, लड़ाई-झगड़ा, आलस्य, अशक्ति, अभाव और चिंता आदि जितने भी दुर्गुण और कुसंस्कार है, सभी अज्ञान और अविद्या से जन्म लेते है। इन्हीं के कारण मनुष्य स्वयं गलती करके बेवजह दु:खी होता रहता है। अगर अविद्या को समस्त पापों की जननी कहा जाये तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

गायत्री मन्त्र मुख्य रूप से इसी दुर्बुद्धिरूपी अविद्या को हटाता है और सद्‌बुद्धि और सद्विचारों की स्थापना करता है। गायत्री मन्त्र में विशुद्ध रूप से परमपिता परमात्मा से सद्‌बुद्धि की प्रार्थना की गई है ।

गायत्री मन्त्र वैज्ञानिक और धार्मिक दोनों ही रूप से अद्वितीय मन्त्र है। जिन लोगों की स्मरण शक्ति कमजोर हो चुकी है, जो मानसिक रूप से जल्दी थक जाते है, ऐसे लोग गायत्री उपासना करके कुछ ही समय में इस महामंत्र के चमत्कार देख सकते है। गायत्री मन्त्र से स्मरण शक्ति को आश्चर्यजनक रूप से बढ़ाया जा सकता है, क्योंकि इस मन्त्र के जप से उपासक किसी भी ध्येय में एकाग्र हो जाता है ।

गायत्री मन्त्र के माध्यम से उपासक न केवल अपना बल्कि अपने निकटवर्ती वातावरण का भी परिशोधन कर सकते है । समाज में व्याप्त कुरीतियों व कुसंस्कारों के उन्मूलन और सद्‌गुणों की स्थापना के लिए सभी मनुष्यों को यथाशक्ति गायत्री शक्ति का आवाहन करना चाहिए ।

अगर संक्षेप में इस महामंत्र की महत्ता का उल्लेख किया जाये तो महर्षि वशिष्ठ ने महर्षि विश्वामित्र को जिस कामधेनु का वर्णन किया है, वो गायत्री ही है। कामधेनु गायत्री एक दैवीय शक्ति है। कामधेनु की कोई सीमा नहीं होती, इससे आप अपनी इच्छा और आवश्यकता के अनुरूप कुछ भी प्राप्त कर सकते है।

केवल आवश्यकता है साधना की विधि को गहराई से समझकर नियमित रूप से उपासना की जाये । श्रृद्धा, विश्वास, प्रेम और समर्पण किसी भी साधना की सफलता के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है ।

- आचार्य सत्यप्रकाश जी

आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

क्या आप डिप्रेशन में हैं?

डिप्रेशन से ग्रस्त एक सज्जन जब 50 वर्ष के हुए तो उनकी पत्नी ने एक काउंसलर का अपॉइंटमेंट लिया जो ज्योतिषी भी थे। कहा कि ये भयंकर डिप्रेशन में हैं, कुंडली भी देखिये इनकी और बताया कि इन सब के कारण मैं भी ठीक नही हूँ।

ज्योतिषी जी ने कुंडली देखी मगर उसमें सबकुछ सही पाया।

अब उन्होनें काउंसलिंग शुरू की। फिर कुछ पर्सनल बातें भी पूछीं और सज्जन की पत्नी को बाहर बैठने को कहा।

सज्जन बोलते गए।

बहुत परेशान हूँ।

चिंताओं से दब गया हूँ... नौकरी का प्रेशर।

बच्चों के एजूकेशन और जॉब की टेंशन..।

घर का लोन... कार का लोन..।

कुछ मन नही करता...

दुनिया तोप समझती है... पर मेरे पास कारतूस जितना भी सामान नही।

मैं डिप्रेशन में हूँ...

कहते हुए पूरे जीवन की किताब खोल दी।

तब विद्वान् काउंसलर ने कुछ सोचा और पूछा.... दसवीं कक्षा में किस स्कूल में पढ़ते थे ?

सज्जन ने उन्हें उस स्कूल का नाम बता दिया।

काउंसलर ने कहा आपको उस स्कूल में जाना होगा।

वहाँ से आपकी दसवीं क्लास के सारे रजिस्टर लेकर आना।

सज्जन स्कूल गए और रजिस्टर ले आए। काउंसलर ने कहा कि अपने साथियों के नाम लिखो और उन्हें ढूंढो और उनके वर्तमान हालचाल की जानकारी लाने की कोशिश करो. सारी जानकारी को डायरी में लिखना और एक माह बाद मिलना।

कुल 4 रजिस्टर, जिसमें 200 नाम थे... और महीना भर दिन रात घूमे।

बमुश्किल अपने 120 सहपाठियों के बारे में जानकारी एकत्रित कर पाए.

आश्चर्य उसमें से 20 प्रतिशत लोग मर चुके थे।

> ''प्रिय पाठकों ! कोरोना महामारी के चलते हुए लॉकडाउन के कारण आपकी प्रिय पत्रिका 'गुरुकुल-दर्शन' के जुलाई और अगस्त 2020 माह के अंक प्रकाशित नहीं हो पाए। आशा है कि भविष्य में गुरुकुल दर्शन निरन्तर पाठकों तक पहुंचती रहेगी।''
>
> – **व्यवस्थापक** गुरुकुल दर्शन

राधाकृष्ण आर्य

7 प्रतिशत लड़कियाँ विधवा और 13 तलाकशुदा या सेपरेटेड रहने लगी थीं।

15 प्रतिशत दोस्त नशेडी निकले जो बात करने के भी लायक नहीं थे।

20 प्रतिशत का पता ही नहीं चला कि अब वो कहाँ हैं।

5 प्रतिशत इतने गरीब निकले कि पूछो मत..

5 प्रतिशत इतने अमीर निकले कि पूछे नहीं।

कुछ केन्सर ग्रस्त, 6–7 प्रतिशत लकवा, डायबिटीज, अस्थमा या दिल के रोगी निकले, 3–4 प्रतिशत का एक्सीडेंट्स में हाथ/पाँव या रीढ़ की हड्डी में चोट से बिस्तर पर थे।

2 से 3 प्रतिशत के बच्चे पागल या निकम्मे निकले।

1 जेल में था और एक 50 की उम्र में सैटल हुआ था इसलिए अब शादी करना चाहता था।

1 अभी भी सैटल नहीं था पर दो तलाक के बावजूद तीसरी शादी की फिराक में था।

महीने भर में... दसवीं कक्षा के सारे रजिस्टर भाग्य की व्यथा खुद सुना रहे थे।

काउंसलर ने पूछा कि अब बताओ डिप्रेशन कैसा है ?

इन सज्जन को समझ आ गया कि उसे कोई बीमारी नहीं है। वो भूखा नहीं मर रहा, दिमाग एकदम सही है, कचहरी पुलिस–वकीलों से उसका पाला नही पड़ा। उसके बीवी–बच्चे बहुत अच्छे हैं, स्वस्थ हैं, वो भी स्वस्थ है. डाक्टर अस्पताल से पाला नहीं पड़ा।

उन्होंने अनुभव किया कि दुनिया में वाकई बहुत दुःख हैं... और मैं बहुत सुखी और भाग्यशाली हूँ।

दो बात तय हुई आज कि धीरूभाई अम्बानी बनें या न बनें न सही और भूखा नहीं मरे, बीमार बिस्तर पर न गुजारे। जेल में दिन न गिनना पड़े तो इस सुंदर जीवन के लिए ऊपर वाले को धन्यवाद देना ही सर्वोत्तम है।

क्या आपको भी लगता है कि आप डिप्रेशन में हैं ?

अगर आप को भी ऐसा लगता है तो आप भी अपने स्कूल जाकर दसवीं कक्षा का रजिस्टर ले आयें!!

– **राधाकृष्ण आर्य**
उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा।

शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कैसे बढ़ाए?

आज पूरा विश्व कोरोना वायरस के प्रकोप से त्रस्त है, इस महामारी से बचाव के लिए कई देशों में वैक्सीन बनाने का कार्य चल रहा है मगर अभी तक सफलता नहीं मिल सकी है, ऐसे में कोरोना से बचाव के लिए केवल एक ही उपाय है और वो है इसकी रोकथाम। हमें अपने शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करना होगा ताकि कोरोना सहित इस तरह के अन्य वायरस से हम बच सकें। वैसे भी पुरानी कहावत है कि **'रोकथाम, उपचार से बेहतर उपाय है।'**

वायरल संक्रमण के मौजूदा दौर में यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि कमजोर प्रतिरोधक क्षमता वाले लोगों पर कोविड-19 के संक्रमण का खतरा ज्यादा है। ऐसे में बचाव और सावधानी ही कोरोना से बचा सकती है। आयुर्वेद में ऐसे कई उपाय है जिन्हें आजमाकर न केवल हम स्वस्थ रह सकते हैं बल्कि ऐसे खतरनाक वायरस और संक्रमण से भी बच सकते हैं। इन उपायों को जानने से पूर्व हम शरीर की प्रतिरोधक क्षमता यानि के इम्युनिटी के बारे में थोड़ी चर्चा कर लेते हैं।

हमारे शरीर में इम्यून सिस्टम एक ऐसा सिस्टम है जो हमें कई प्रकार के बाहरी संक्रमण और बीमारियों से बचाए रखता है। जब भी हमारे शरीर में किसी प्रकार की एंटीबॉडीज प्रवेश करने की कोशिश करती है तब यह इम्यून सिस्टम उन्हें रोकने के लिए विपरीत क्रिया करता है और हमारा बचाव करता है। इसके लिए हमारे इम्यून सिस्टम या इम्यूनिटी का मजबूत होना बहुत आवश्यक है। तो आइए जानते हैं कि कैसे हम अपनी इम्यूनिटी को मजबूत कर सकते हैं :-

1) योगासन और खानपान द्वारा : हल्का गरम या गुनगुना पानी पीएं। प्रतिदिन 30 मिनट तक योग, प्राणायाम और मेडिटेशन करें। खाने में हल्दी, जीरा, धनिया, पालक और लहसुन का प्रयोग करें। बहुत अधिक तले-भुने भोजन से परहेज करें। सुबह-शाम च्यवनप्राश का सेवन करें, शुगर के मरीज शुगर फ्री च्यवनप्राश ले सकते हैं। दूध में हल्दी डालकर पीएं। सुबह-सुबह हर्बल चाय या आयुर्वेदिक काढ़ा का सेवन करें।

2) आयुर्वेदिक काढ़े के फायदे :- तुलसी, दालचीनी, काली मिर्च, सुंठी, मुनक्का को मिलाकर बना काढ़ा दिन में एक या दो बार पीने से शरीर और मन स्वस्थ रहेगा। शरीर में ऊर्जा बनी रहेगी। आप चाहे तो स्वाद के लिए इसमें देशी खाण्ड, नींबू का रस भी मिला सकते हैं। ध्यान रहे काढ़ा विशेषज्ञ की देखरेख में ही बनाएं।

डॉ. देव आनन्द

3) खांसी और गले में खिचखिच हो तो :-यदि आपके गले में खिचखिच और खांसी है तो दिन में एक बार गरम पानी में पुदीना अथवा अजवायन डालकर उसकी भाप लें, आराम मिलेगा। लौंग, चीनी और शहद मिलाकर दिन में दो से तीन बार लें, इससे कफ और गले की खिचखिच से राहत मिलेगी।

4) विटामिन-डी : विटामिन डी आपको सुबह सूर्योदय के बाद थोड़ी देर तक सूर्य से निकलने वाली किरणों के जरिए प्राप्त होती है। सूर्य विटामिन डी का सबसे प्रबल स्रोत है, इसलिए प्रतिदिन 7 से 8 मिनट तक धूप सेंके। विटामिन डी से हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है।

5) विटामिन-सी : रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने में विटामिन-सी भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह आंवला, कीवी, नींबू में भरपूर मात्रा में होता है।

6) दही का प्रयोग करें : दही एक ऐसा खाद्य पदार्थ है जिसका सेवन हम अक्सर नाश्ते में करते हैं। यह हमारे पेट को ठण्डा रखने के साथ-साथ हमें कई रोगों से भी बचाता है। यह पेट में अच्छे बैक्टीरिया बनाकर हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है। अतः इम्यूनिटी को मजबूत करने के लिए दही का नियमित सेवन करें।

कुछ प्रमुख क्रियाएं करें

1) नासिका क्रिया : इसके लिए तिल का तेल, नारियल तेल या देशी घी का प्रयोग कर सकते हैं। इस विधि को आयुर्वेद में प्रतिमर्श नास्य कहते है। यह सुबह व शाम को कर सकते हैं।

2) मुंह में तेल की क्रिया : एक चम्मच तिल या नारियल तेल मुंह में दो से तीन मिनट तक रखें, इसके बाद तेल को बाहर निकालकर कुल्ला कर लें।

अतः उपर्युक्त लेख में बताए गये उपायों को अपनाकर आप न केवल स्वयं बल्कि अपने परिवारजनों को भी कोरोना वायरस से बचा सकते हैं। आमतौर पर भी यह उपाय बहुत कारगर है जो हमें स्वस्थ रखने के साथ-साथ विभिन्न रोंगों से बचाते हैं। अन्त में बस इतना ही कहूंगा कि कोरोना से बचाव के लिए निर्धारित हिदायतों का पालन अवश्य करें।

- डॉ. देव आनन्द
मुख्य चिकित्सक, स्वामी श्रद्धानन्द योग, प्राकृतिक एवं आयुर्वेदिक संस्थान, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

पाखण्ड का खुलकर विरोध करें

समाज में फैली कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, नारी-उत्पीड़न, बलात्कार जैसी बुराइयों के साथ-साथ पाखण्ड नामक दुष्कर्म भी समाज के लिए घातक है। कुछ ढोंगी लोगों ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए भांति-भांति के पाखण्डों को जन्म दे दिया है और लोग भी इन पाखण्डों की गिरफ्त में फंसकर अपना आर्थिक और मानसिक नुकसान कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शास्त्र, बुद्धि व तर्क से पाखण्ड के खिलाफ जो आन्दोलन खड़ा किया, वह उनके समवर्ती, परवर्ती समाज -सुधारक महापुरुषों में दिखाई नहीं पड़ता। महाभारत युद्ध के बाद उत्पन्न हुई परिस्थितियों में एकमात्र ऋषि होने के कारण हम तो कहें कि स्वामी दयानन्द से पूर्ववर्ती ऋषियों में भी इस दृष्टि से विलक्षण हैं, अनुपम है। एक रास्ते तो त्याज्य बताकर वे हमें दूसरा रास्ता भी बता गये जो गाह्य है, सत्य है, संशय व हानिरहित है। यही तो उनका ऋषित्व है।

पाखण्ड से देश को होने वाली जिस महाहानि को ऋषि ने देखा था, वह आज भी हो रही है, बढ़ रही है। अन्तर केवल इतना है कि अकेले ऋषि ने पाखण्ड को मिटाने व सत्यधर्म के प्रचार के लिए जो पुरुषार्थ किया था, हम लोग उसके हजारवें अंश के बराबर भी पुरुषार्थ नहीं कर पा रहे हैं। शारीरिक रूप से रोगी या मनोरोगी यदि डॉक्टर के पास न जाकर किसी पाखण्डी के पास जायेगा तो समय लेकर स्वाभाविक रूप से ठीक होने वाले रोगों से तुक्त पाकर मिथ्या भ्रम में उलझ सकता है और आगे निश्चित ही ऐसी क्रियाओं द्वारा स्वयं की व अन्य की हानि करेगा। यह भी सम्भव है कि डॉक्टर द्वारा समय पर उचित चिकित्सा ना मिलने से रोग बढ़ जाए व प्राणों से ही हाथ गंवाना पड़े, कई बार ऐसा होता भी है। कहने का आशय यह है कि पाखण्ड से समाज और राष्ट्र को सिर्फ हानि है, ऐसी अवस्था में होने वाली मृत्यु पापज है न की कर्मज।

यदि रोगी सही समय पर डॉक्टर के पास जाए तो रोग ठीक होने की सही दिशा में पुरुषार्थ होता है। वहाँ समर्पण व विश्वास परमात्मा का भी होता है। डॉक्टर भी कहते हैं -'हम प्रयास करते हैं, उपचार करते हैं आगे परमात्मा की न्याय-व्यवस्था'। यहाँ यह मृत्यु होगी तो कर्मज होगी, पाप करते हुए नहीं होगी। 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:' के वैदिक आदर्श का यहां पालन होगा। इसी आदर्श के पालन का संदेश हमारे उन बलिदानियों ने दिया था जो चोटी व जनेऊ की रक्षा के लिए अपना सिर भेंट कर गये। हम लोभ व मोहग्रस्त होकर तुच्छ स्वार्थ की पूर्ति के लिए पाखण्ड अपनाकर राष्ट्र की हानि कर बैठते हैं। इसी प्रकार विभिन्न इच्छाओं की पूर्ति के लिए पाषाणों, चौराहों, वृक्षों, सर्प, कब्र पर माथा टेकते हैं। जरा विचार करें, क्या कब्र या वृक्षों पर माथा टेकने से हमारी कोई इच्छा पूरी हो सकती है? क्या कोई मृत व्यक्ति जो बहुत पहले मृत्यु को प्राप्त हो चुका है और कब्र में दफन है, वह आपकी कोई प्रार्थना या दुआ पूरी कर सकता है? बुद्धि व सद्ज्ञान के दाता ईश्वर का ध्यान, उपासना नहीं करते और इन पाखण्डों में पड़े हुए हैं। अत: बुद्धि सन्मार्ग में न चलकर आज चहुंओर अराजकता है।

महाशय जयपाल आर्य

आर्यसमाज से जुड़े लोग इस विषय में जरूर चेतें है मगर यहाँ भी कुछ तथाकथित आर्यसमाज के लोग भी पाखण्ड में लिप्त देखे गये हैं। ऐसे लोग जो पाखण्ड खंडन से समझौता करते हैं या आर्यसमाज को साधन बनाकर साध्य कुछ और ही रखते हैं वे भी तो पाखण्ड में लिप्त हैं। धन्य है ऋषि दयानन्द जो पाखण्ड को पाप के साथ-साथ जघन्य अपराध भी सिद्ध कर गये। अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में ऋषि लिखते हैं -''और मारण, मोहन, उच्चटन, विद्वेषण, वशीकरण आदि प्रयोग करते हैं। सो मंत्र से तो कुछ भी नहीं होता किन्तु क्रिया से सब कुछ करते हैं। जब किसी को मारने का प्रयोग करते हैं तब इधर कराने वाले से धन लेके आटे वा मिट्टी का पुतला, जिसका मारना चाहते हैं, उसका बना लेते हैं। उसकी छाती, नाभि, कण्ठ में धुरे प्रवेश कर देते हैं। आँख, हाथ, पग में कीले ठोकते हैं। उसके ऊपर भैरव व दुर्गा की मूर्ति बना हाथ में त्रिशूल दे उसके हृदय पर लगाते हैं। एक वेदी बनाकर मांस आदि का होम करने लगते हैं और उधर दूत आदि भेज के उसको विष आदि से मारने का उपाय करते हैं जो अपने पुरश्चरण के बीच में उसको मार डाला तो अपने को भैरव, देवी की सिद्धि वाले बतलाते हैं।''

हमारे देश का दुर्भाग्य है कि आज ऐसे अपराधी और पाखण्डी अपने ऐसे अपराधों और दुष्कर्मो का प्रचार दैनिक समाचार पत्रों, टीवी चैनलों व अन्य आधुनिक माध्यमों से खुलेआम कर रहे हैं। जगह-जगह पाखण्ड, आडम्बरों की दुकानें सजाए बैठे हैं, विडम्बना ये है कि राज व्यवस्था में इन्हें कोई दण्ड नहीं मिला क्योंकि हमारे देश के राजनेता ही पाखण्ड के वश में है। इस दिशा में एक बार फिर ऋषि दयानन्द के सिपाहियों को सार्थक कदम उठाने होंगे, समाज में बढ़ते पाखण्ड और कुरीतियों को समाप्त करने के लिए फिर से जाग्रति लानी होगी। यह कार्य सिर्फ और सिर्फ आर्यसमाज कर सकता है।

-महाशय जयपाल आर्य
वरिष्ठ भजनोपदेशक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

नई शिक्षा नीति

नई शिक्षा नीति 1986 की शिक्षा नीति की जगह पर लागू की गई है। नई शिक्षा नीति ने 34 साल पुरानी शिक्षा नीति को बदला है। नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत 3 साल से 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून -2009 के अंतर्गत ही रखा है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है। नई शिक्षा नीति की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलक 'शिक्षा मंत्रालय' कर दिया गया है। नई शिक्षा नीति में कई बड़े बदलाव किये है, जिनमें शीर्ष विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में कैंपस स्थापित करने की अनुमति देना, छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करना और संस्थानों की दिशा में एक बड़ा कदम शामिल है। इस नीति का लक्ष्य 'भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति' बनाना है। वर्ष 2040 तक सभी उच्च शिक्षा संस्थान का उद्देश्य बहु-विषयक संस्थान बनना होगा, जिनमें से प्रत्येक का लक्ष्य 3000 या अधिक छात्र होंगे।

नई शिक्षा नीति 21 वीं सदी के भारत का और नए भारत का की नीवं तैयार करने वाली है। अभी तक हमारी शिक्षा नीति की व्यवस्था में 'क्या सोचना है' पर ध्यान केंद्रित रहा है जबकि इस शिक्षा नीति में 'कैसे सोचना है' पर बल दिया जा रहा है। नई नीति का लक्ष्य भारत के स्कूलों और उच्च शिक्षा प्रणाली में इस तरह के सुधार करना है कि भारत दुनिया में ज्ञान का शक्तिशाली देश कहलाए। नई शिक्षा नीति में ऐसा प्रावधान किया कि छात्रों को वैश्विक नागरिक बनाने के साथ साथ उनको अपने देश की जड़ों से भी जोड़कर रखा जाएगा।

स्कूली शिक्षा का नया ढांचा रू गौरतलब है कि नई शिक्षा नीति में 10.2 के प्रारूप को पूरी तरह खत्म कर दिया गया है।वर्तमान में 3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चे 10.2 वाले ढाँचे में शामिल नहीं हैं क्योंकि छह वर्ष के बच्चो को कक्षा 1 में प्रवेश दिया जाता है। नए ढाँचे में तीन वर्ष के बच्चो को शामिल क्र प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की एक मजबूत बुनियाद को शामिल किया गया है जिससे आगे चलकर बच्चों का विकास बेहतर हो, वे बेहतर उपलब्धियाँ हासिल कर सकें और खुशहाल हों। अभी तक हमारे देश में स्कूली पाठ्यक्रम 10.2 के हिसाब से चलता था लेकिन अब ये 5.3.34 के हिसाब से होगा। ये फार्मूला इस प्रकार होगा रू

फाउंडेशन स्टेज : फाउंडेशन स्टेज 3 से 8 साल तक के बच्चों के लिए हैं। जिसमें तीन साल की प्री स्कूल शिक्षा तथा दो साल की स्कूली शिक्षा (कक्षा 1 तथा 2) शामिल है। फाउंडेशन स्टेज के अंतर्गत भाषा कौशल और शिक्षण के विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

कुलदीप मलिक

प्रिप्रेटरी स्टेज : इस स्टेज के अंतर्गत 8 साल से लेकर 11 साल तक के बच्चे आएँगे। इस स्टेज में बच्चों की भाषा और संख्यात्मक कौशल में विकास करना शिक्षकों का उद्देश्य रहेगा। इस स्टेज में बच्चों को क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाया जाएगा।

मिडिल स्टेज : मिडिल स्टेज के अंतर्गत कक्षा 6 से 8 तक के बच्चे आएंगे। कक्षा 6 से बच्चों को कोडिंग सिखाई जाएगी और इन्हे व्यावसायिक परीक्षण के साथ- साथ इंटर्नशिप भी प्रदान की जाएगी।

सेकेंडरी स्टेज : सेकेंडरी स्टेज में कक्षा 9 से 12 तक के बच्चे आएँगे। जैसे कि पहले बच्चे अलग अलग स्ट्रीम (विज्ञान ,कॉमर्स व आर्ट्स) लेते थे परन्तु अब यह खत्म कर दिया गया है। अब बच्चे विज्ञान संकाय भी अपनी पसंद विषय चुन सकते हैं जैसे भौतिक विज्ञान के साथ इतिहास।

नई शिक्षा नीति के लाभ :-

1. नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए जीडीपी का 6 प्रतिशत हिस्सा खर्च किया जाएगा।

2. पढ़ाई में संस्कृत और भारत की अन्य प्राचीन भाषाएँ पढ़ने का विकल्प रखा जाएगा। यह छात्र की इच्छा पर निर्भर है, छात्र अगर चाहे तो ये भाषाएँ पढ़ सकते हैं।

3. बोर्ड परीक्षाओं में भी बदलाव किया जाएगा। ऐसा हो सकता है कि साल में दो बार छात्रों का बोझ कम करने के लिए बोर्ड परीक्षाएं ली जाएं।

4. पढ़ाई को आसान बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल किया जाए।

5. उच्च शिक्षा से एम.फिल. की डिग्री को खत्म किया जा रहा है।

6. छात्रों को तीन भाषा सिखाई जाएंगी जो कि राज्य अपने स्तर पर निर्धारित करेंगे।

7. बच्चों की पढ़ाई के साथ - साथ उनके कौशल पर भी

विशेष ध्यान दिया जाएगा।

8 . यदि कोई छात्र किसी कोर्स को बीच में छोड़कर दूसरे कोर्स में दाखिला लेना चाहता है तो वह पहले कोर्स से निश्चित समय तक ब्रेक ले सकता है और दूसरा कोर्स ले सकता है।

9 . 2025 के अंत तक नई शिक्षा नीति अंतर्गत कम से कम 50 : छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा पढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित।

नई शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धांत :-

शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य अच्छे इंसानों का विकास करना है-जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो, जिसमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हो। इसका उद्देश्य ऐसे उत्पादक लोगों को तैयार करना है,

जो कि संविधान द्वारा परिकल्पित-समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरिके से योगदान करे।

एक अच्छी संस्था वह है जिसमें प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है, जहां एक सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण मौजूद होता है,जहाँ सभी छात्रों के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध कराये जाते हैं और जहाँ सीखने के लिए अच्छे बुनियादी ढाँचे और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध हैं। ये सब हासिल करना प्रत्येक शिक्षा संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए। तथापि, साथ ही विभिन्न संस्थानों के बीच और शिक्षा के हर स्तर पर परस्पर सहज जुड़ाव और समन्वय आवश्यक है।

मूलभूत सिद्धांत जो स्तर पर शिक्षा प्रणाली और साथ ही व्यक्तिगत संस्थानों दोनों का मार्गदर्शन करेंगे इस प्रकार हैं:-

1. हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना। शिक्षकों और अभिभावकों को इन क्षमताओं के प्रति संवेदनशील बनाना जिससे वे बच्चे की अकादमिक और अन्य क्षमताओं में उसके सर्वांगीण विकास पर ध्यान दें।

2 . बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना जिससे सभी बच्चे कक्षा 3 तक साक्षरता और संख्याज्ञान जैसे सीखने के मूलभूत कौशलों को हासिल सकें।

3 . लचीलापन ताकि शिक्षार्थियों में उनके सीखने के तौर -तरीके और कार्यक्रमों को चुनने की क्षमता हो,और इस तरह वे अपनी प्रतिभा और रूचियों के अनुसार जीवन में अपना रास्ता चुन सकें।

4 . सभी ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए एक बहु-विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान , कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु -विषयक और समग्र शिक्षा का विकास।

5 . अवधारणात्मक समझ पर जोर, न कि रटंत पद्धति और केवल परीक्षा के लिए पढ़ाई।

6 . नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे-सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, बहुलतावाद, समानता और न्याय।

7 . रचनात्मकता और तार्किक सोच - तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए।

8 . बहु - भाषिकता और अध्ययन-अध्यापन के कार्य भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन।

9 . शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है -गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच को प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना जाना चाहिए।

अंत में हम कह सकते कि नई शिक्षा नीति भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्चतर गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराके और भारत को वैश्विक ज्ञान शक्ति बनाकर भारत को एक जीवंत और न्यायसंगत ज्ञान समाज में बदले के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी। यह शिक्षा नीति सही मायने में वैश्विक नागरिक बनाकर वैश्विक कल्याण के लिए मिल का पत्थर साबित होगी। यह नीति 21 वीं सदी में बड़ा बदलाव लाने का एक बड़ा अवसर है, यह तभी संभव होगा जब देश का हर नागरिक इसमें अपना योगदान देगा।

- कुलदीप मलिक
हिंदी शिक्षक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

स्वयं रखे अपने स्वास्थ्य का ध्यान

स्वयं को डिटॉक्स करना स्वस्थ रहने का सर्वोत्तम उपाय है। अधिकतर लोग स्वाद के वशीभूत होकर भूल जाते हैं कि ज्यादा मसालेदार और ऊल-जुलूल पदार्थों का हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पड़ेगा। यह हमारे लीवर और डाइजेस्टिव सिस्टम के लिए बेहद खतरनाक साबित हो सकते हैं। जो लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होते हैं, वे अपने स्वास्थ्य का स्वयं ध्यान रखते हैं और एक नियमित दिनचर्या के पालन के साथ-साथ शुद्ध और सात्विक आहार लेते हैं। अगर कभी परिस्थितिवश उनका यह नियम टूट भी जाए तो वे स्वयं को डिटॉक्स कर अपने शरीर को फिर से स्वस्थ बना लेते हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में भी शरीर को डिटॉक्स करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द योग, प्राकृतिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा संस्थान हैं जहाँ पर न केवल भयंकर रोगों को पूर्ण निदान किया जाता है बल्कि आमतौर पर शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अनेक प्रक्रियाएं करायी जाती है। देश-विदेश के लाखों लोग इस संस्थान में आकर स्वस्थ्य लाभ प्राप्त कर चुके हैं। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आप निम्नलिखित उपायों का अनुसरण कर सकते हैं :-

1) नियमित योग एवं व्यायाम : व्यायाम एवं योग शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बहुत ही आवश्यक है। नियमित व्यायाम करने से शरीर से भरपूर मात्रा में पसीना निकलता है जिससे शरीर के अन्दर से विषैले पदार्थ पसीने के साथ बाहर निकल जाते हैं और शरीर अधिक मात्रा में ऑक्सीजन ऑबजर्व करता है। इसके अलावा नियमित योग करने से आप न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ होंगे बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत हो जाओगे।

2) उपवास करें: सप्ताह में कम से कम एक दिन उपवास रखें। इसके हमारे पाचन-तंत्र को मजबूत और सुदृढ़ होने के लिए पर्याप्त समय मिलेगा। उपवास वाले दिन मौसम के अनुसार फल, सलाद, जूस, छाछ आदि ले सकते हैं। जिन लोगों को वजन कम करना है वे गर्म पानी में नींबू और शहद मिलाकर ले सकते हैं। सायंकाल में हरी सब्जी का सेवन करें। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि उपवास वाले दिन आपको तला हुआ, मसालेदार भोजन नहीं करना है।

3) जल्दी सोए और जल्दी जगे : भागदौड़ भरी आजकल की दिनचर्या में देर रात का जागना और सुबह देर तक सोते रहना आम बात हो गई है मगर यह गलत है। आधुनिक लाइफस्टाइल के नाम पर देर रात तक जागना और सुबह फिर देर से उठना, हमें बीमार बना रहा है। यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक है। रात को 9 बजे से प्रातः 4 बजे तक सोना बहुत अच्छा माना जाता है। इसके अलावा रात को सोने से लगभग 3 घंटे पहले भोजन कर लेना चाहिए। कम से कम 8 घंटे की नींद अवश्य लेनी चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो जब आप सुबह जल्दी उठेंगे तो स्वयं को एकदम तरोताजा महसूस करेंगे।

राजेश कुमार

4) हरी सब्जियों व फलों का सेवन करें : ताजे फल व हरी सब्जियां सेहत के लिए बहुत अच्छी होती हैं। इनमें फाइबर, आयरन और विटामिन्स भरपूर मात्रा में होते हैं जो पाचन तंत्र को मजबूत करते हैं और हमारे शरीर को मजबूती प्रदान करने के साथ-साथ वजन को भी संतुलित रखते हैं। हरी सब्जियों का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखें कि उनके उत्पादन में केमिकल और जहरीले पदार्थों का उपयोग न हुआ हो।

यहाँ हम पाठकों को बता दें कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा 200 एकड़ भूमि पर प्राकृतिक खेती की जा रही है जिसमें हरी सब्जियां और अन्य फल होते हैं। गुरुकुल प्राकृतिक फार्म की फल व सब्जियाँ व अन्य सभी उत्पाद आप गुरुकुल के मेन गेट के सामने स्थित प्राकृतिक उत्पाद केन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं।

5) भरपूर मात्रा में पानी, जूस और हर्बल टी का प्रयोग करें : हमारे शरीर की संरचना कुछ ऐसी है कि शरीर में लगभग 72 प्रतिशत पानी है। प्रतिदिन 8 से 10 गिलास पानी अवश्य पीएं । कैफीन युक्त पेय पदार्थो के सेवन से परहेज करें। ताजे फलों का रस एवं हरी सब्जियों का रस रेशे सहित पीयें। जिन लोगों को चाय की बुरी आदत है वे चाय के स्थान पर हर्बल-टी या ग्रीन-टी का सेवन करें। ग्रीन-टी में नींबू रस की कुछ बूंदे डालने से यह और अधिक लाभदायक हो जाती है। इसके लिए आप गुरुकुल कुरुक्षेत्र की फार्मेसी में निर्मित हर्बल-टी का प्रयोग कर सकते हैं।

6) शरीर की नियमित मालिश करायें : शरीर को स्वस्थ एवं मांसपेशियों को मजबूत रखने के लिए मालिश बहुत जरूरी है।

(...शेष पृष्ठ 21 पर पढ़े)

ब्रह्ममुहूर्त में क्यों उठें?

रात्रि के अंतिम प्रहर को ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं। हमारे ऋषि–मुनियों ने इस मुहूर्त का विशेष महत्त्व बताया है। यह समय निद्रा त्याग के लिए सर्वोत्तम है। ब्रह्ममुहूर्त में उठने से सौंदर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। सूर्योदय से चार घड़ी (लगभग डेढ़ घण्टा) पूर्व ब्रह्ममुहूर्त में ही जग जाना चाहिए। इस समय सोना शास्त्र निषिद्ध है।

ब्रह्म का मतलब परम तत्त्व या परमात्मा। मुहूर्त यानि अनुकूल समय। रात्रि का अंतिम प्रहर अर्थात् प्रातः 4 से 5 : 30 बजे का समय ब्रह्ममुहूर्त कहा गया है।

सिख पंथ में इस समय के लिए बेहद सुन्दर नाम है –अमृत वेला। जिसके द्वारा इस समय का महत्त्व स्वयं ही साबित हो जाता है। ईश्वर भक्ति के लिए यह महत्त्व स्वयं ही साबित हो जाता है। ईश्वर भक्ति के लिए यह सर्वश्रेष्ठ समय है। इस समय उठने से मनुष्य को सौंदर्य, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य आदि की प्राप्ति होती है। उसका मन शान्त और तन पवित्र होता है।

ब्रह्म मुहूर्त में उठना हमारे जीवन के लिए बहुत लाभकारी है। इससे हमारा शरीर स्वस्थ होता है और दिन भर स्फूर्ति बनी रहती है। स्वस्थ रहने और सफल होने का यह ऐसा फार्मूला है जिसमें खर्च कुछ नहीं होता, केवल आलस्य छोड़ने की जरूरत है।

ब्रह्म मुहूर्त में उठने से व्यक्ति को सुन्दरता, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु आदि की प्राप्ति होती है। ऐसा करने से शरीर कमल की तरह सुन्दर हो जाता है।

ब्रह्ममुहूर्त और प्रकृति : ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति का गहरा नाता है। इस समय में पशु–पक्षी जाग जाते हैं। उनका भरपूर कलरव शुरु हो जाता है। कमल का फूल भी खिल उठता है। मुर्गे बांग देने लगते हैं। एक तरह से प्रकृति भी ब्रह्म मुहूर्त में चैतन्य हो जाती है। यह प्रतीक है उठने, जागने का। प्रकृति हमें संदेश देती है ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लिए।

इसलिए मिलती है सफलता और समृद्धि : आयुर्वेद के अनुसार ब्रह्ममुहूर्त में उठकर टहलने से शरीर में संजीवनी शक्ति का संचार होता है। यही कारण है कि इस समय बहने वाली वायु को अमृततुल्य कहा गया है। इसके अलावा यह समय अध्ययन के लिए भी सर्वोत्तम बताया गया है क्योंकि रात को आराम करने के बाद सुबह जब हम उठते है तो शरीर तथा मस्तिष्क में भी स्फूर्ति व ताजगी बनी रहती है। ब्रह्म मुहूर्त के धार्मिक, पौराणिक व व्यावहारिक पहलुओं और लाभ को जानकर हर रोज इस शुभ घड़ी में जागना शुरु करें तो बेहतर नतीजे मिलेंगे।

ब्रह्ममुहूर्त में उठने वाला व्यक्ति सफल, सुखी और समृद्ध होता है क्यों? क्योंकि जल्दी उठने से दिनभर के कार्यों और योजनाओं को बनाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इसलिए न केवल जीवन सफल होता है बल्कि आयु भी बढ़ती है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने वाला हर व्यक्ति सुखी और समृद्ध हो सकता हैं कारण वह जो काम करता है, उसमें उसकी प्रगति होती है। विद्यार्थी परीक्षा में सफल रहता है। नौकरी करने वाले से बॉस खुश रहता है। व्यापारी अच्छी कमाई कर सकता है। बीमार आदमी की आय तो प्रभावित होती ही है, उल्टे खर्च बढ़ने लगता है। सफलता उसी के कदम चूमती है जो समय का सदुपयोग करे और स्वस्थ रहे। अतः स्वस्थ और सफल रहना है तो ब्रह्ममुहूर्त में उठें।

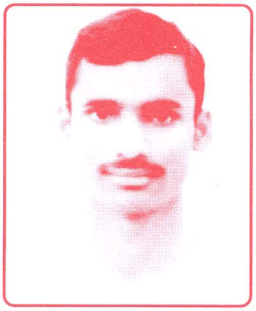

ब्र0 अमित शास्त्री

वेदों में भी ब्रह्म मुहूर्त में उठने का महत्त्व और उससे होने वाले लाभ का उल्लेख किया गया है।

प्रातारत्नं प्रातरिष्वा दधाति तं चिकित्सा प्रतिगृह्णनिधतो।

तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचेत सुवीरः।।

(ऋग्वेद 1/125/1)

अर्थात सुबह सूर्य उदय होने से पहले उठने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसीलिए बुद्धिमान लोग इस समय को व्यर्थ नहीं गंवाते। सुबह जल्दी उठने वाला व्यक्ति स्वस्थ, सुखी, शक्तिशाली और दीर्घायु होता है।

यद्य सूर उदितोऽनागा मित्रोऽर्यमा।

सुवाति सविता भगः।। (सामवेद 35)

अर्थात् व्यक्ति को सुबह सूर्योदय से पहले शौच व स्नान कर लेना चाहिए। इसके बाद भगवान की पूजा–अर्चना करना चाहिए। इस समय की शुद्ध व निर्मल हवा से स्वास्थ्य और संपत्ति की वृद्धि होती है।

उद्यन्त्सूर्यं इव सुप्तानां वर्च आददे। (अथ.7/16/2)

अर्थात् सूरज उगने के बाद भी जो नहीं उठते या जागते उनका तेज खत्म हो जाता है। व्यावहारिक रूप से अच्छी सेहत, ताजगी और ऊर्जा पाने के लिए ब्रह्ममुहूर्त बेहतर समय है क्योंकि रात की नींद के बाद पिछले दिन की शारीरिक और मानसिक थकान उतर जाने पर दिमाग शान्त और स्थिर रहता है। वातावरण और हवा भी स्वच्छ होती है। ऐसे में देव उपासना, ध्यान, योग, पूजा, तन, मन और बुद्धि को पुष्ट करते हैं।

– ब्र0 अमित शास्त्री
आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

राम मंदिर निर्माण का ऐतिहासिक क्षण

गत माह भाद्रपद कृष्णा द्वितीया विक्रमी सम्वत् 2077 तदनुसार 5 अगस्त 2020 को मुस्लिम विधर्मियों से लम्बे संघर्ष व बलिदानों के पश्चात् पुनः प्रभुभक्त मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के स्मारक राममन्दिर की आधारशिला रखने का समय आ उपस्थित हुआ है। यदि यह समय उपस्थित न हुआ होता तो आगे चलकर किसी भी काल में वेद विरोधियों के द्वारा बाबरी मस्जिद बन जाने की सम्भावना थी अथवा विवाद के बने रहने से सदा देवासुर संग्राम की स्थिति बनी ही रहती।

इन दोनों ही स्थितियों से बचने के लिये वर्तमान परिस्थितियों में इस राममन्दिर का बनना अत्यन्त आवश्यक था। राममन्दिर की आधारशिला रखे जाने के अवसर पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के वास्तविक अनुयायी वैदिक ज्ञान के आलोक से आलोकित होकर यह मान सकते हैं कि अयोध्या में मन्दिर निर्माण के पश्चात् उस विशाल मन्दिर में राम की मूर्ति की स्थापना की जायेगी। तब उसे देखकर लोग कहेंगे कि यह मूर्ति सामने खड़े महापर्वत से निकली है, परन्तु कलाकार का कथन होगा कि नहीं, इसका निर्माण मैंने किया है। इसके हाथ-पैर आदि चिह्न मेरे अन्तःकरण में विराजमान थे, मैंने उन्हें उन्हीं के अनुरूप पत्थर में से प्रकट किया है।

इस प्रकार इस राम के चित्र को कलाकार से जन्म मिल जायेगा। कलाकार से जन्म पाकर वह मूर्ति इस विशाल मन्दिर में पहुंच जायेगी। यहां आने पर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा होगी। प्राण-प्रतिष्ठा हुई या नहीं यह तो परीक्षा का विषय है और यह परीक्षा करने पर इसमें प्राण का परिचय निश्चय ही नहीं मिल पाता है तथापि यह मान लिया जायेगा कि प्राण प्रतिष्ठा हो गयी है। मन्दिर में प्रतिष्ठित होने के पश्चात् यह राम या राम की मूर्ति पुजारियों के हाथ में आयेगी। पुजारियों द्वारा इसे स्नान कराया जायेगा , वस्त्र पहनाये जायेंगे और यद्यपि वह मूर्ति खायेगी नहीं परन्तु उसे खाने के पदार्थ मिष्टान्न आदि पुजारियों द्वारा दिये जायेंगे।

इस प्रकार हम राम के इस चित्र या मूर्ति को कुछ देंगे ही। हमें उससे मिलेगा कुछ भी नहीं जबकि पूजा का लक्षण कुछ लेना है, देना नहीं। दृष्टान्त के रूप में जैसे कि कोई भद्र पुरुष उससे ज्ञान लेना चाहता है परन्तु उसकी कामना की वस्तु ज्ञान उस मूर्ति के पास नहीं है, तो वह कहाँ से दे, परन्तु राम का चरित्र अनेक गुणों का भण्डार है। उनके जीवन में हम आध्यात्मिक, आधिदैविक व आधिभौतिक अनेक प्रकार के विज्ञानों का समावेश पाते हैं। वशिष्ठ और विश्वामित्र आदि गुरुजनों से राम ने अपनी आत्मा में गुणों का प्रकाश किया था। सभी आवश्यक गुणों के धनी राम के चरित्र से हम ऐसा कोई महत्त्वपूर्ण विज्ञान शेष नहीं रह जाता जिसे प्राप्त न कर सकें। घोर तप के द्वारा राम के एक गुण का अपनी आत्मा में संग्रह करना ही राम के चरित्र की पूजा करना है। अब सब बुद्धिमान् स्वयं विचार करें कि पूजा चित्र की होनी चाहिये या चरित्र की। कुछ ग्रहण करने के लिये निश्चय ही पूजा चरित्र की होनी चाहिये चित्र की नहीं।

चित्र चरित्र का बोधक है यही चित्र की उपयोगिता है। इसके अतिरिक्त अचेतन चित्र के प्रति चेतनवत् व्यवहार करना वैदिक धर्म के विरुद्ध अविद्या ही है। इस प्रकार की अविद्या से बचकर हमें वे कार्य करने चाहियें कि जो श्री राम करते थे क्योंकि उनका जीवन धर्म का साक्षात् स्वरूप था। दूसरी वार्ता यह है कि परमपिता परमात्मा अजन्मा है इस कारण किसी भी उत्तमोत्तम मनुष्य को परमात्मा मानना सत्य सनातन वैदिक धर्म के विरुद्ध निरा अज्ञान ही है। अतः हमें सन्ध्या-उपासना पुरुषोत्तम श्रीराम की तरह परमेश्वर की ही करनी चाहिये अन्य किसी की नहीं ।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के स्मारक राममन्दिर में होने वाली इस अविद्या को देखकर भी विज्ञजन राममन्दिर के निर्माण का विरोध नहीं करके भारी समर्थन कर रहे हैं, यही राजनीति का नियम है। श्रीराम के स्मारक के विरुद्ध बहुत-सी वेद विरुद्ध दुष्ट शक्तियां संगठित हैं। वे देश, धर्म और संस्कृति की विरोधिनी शक्तियां अनेक प्रकार की बाधायें अब भी उपस्थित कर रही हैं। हमें उनके द्वारा फैलाये जा रहे समस्त भ्रमजालों से बचने की आवश्यकता है। इस भ्रमजाल में फंसकर कोई भी अपनी ही हानि कर बैठेगा और उसे

गुरुकुल में हर्षोल्लास से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस, राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने भी दी शुभकामनाएं

शहीदों के जीवन से प्रेरणा लें युवा पीढ़ी-कुलवन्त सैनी

कुरुक्षेत्र, 15 अगस्त 2020 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में 74वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। प्रधान कुलवन्त सैनी ने देश की आन, बान और शान 'तिरंगा' फहराया और सलामी दी। उन्होंने कहा कि देश को अंग्रेजों से आजाद कराने में लाखों युवाओं ने अपने प्राणों को आहुत किया है, आज की युवा पीढ़ी को आजादी के सच्चे मायने समझने होंगे और उन महान बलिदानियों की शहादत को हमेशा याद रखना होगा। इस अवसर पर गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता, मुख्य संरक्षक संजीव आर्य, डीपीईई देवीदयाल सहित अन्य अध्यापकगण उपस्थित रहे। गुरुकुल के संरक्षक एवं गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने भी गुरुकुल परिवार सहित समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी है। प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने कहा कि हमें आजादी लाखों कुर्बानियों के बाद मिली है, आज अगर हम खुली हवा में सांस ले रहे हैं तो इसके लिए हमारे देश के लाखों जवानों ने अपने प्राणों का बलिदान किया है। हमें ऐसे महान शहीदों को हमेशा नमन करना चाहिए और उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने सभी देशवासियों को 74वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं भी दीं। निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता ने कहा कि हमारे लिए यह गर्व की बात है कि आज हमारा देश आजाद है। गुलामी के दौर में अंग्रेजी हुकूमत हमारे देशवासियों पर इतने जुल्म करती थी कि यहाँ लोगों का जीना दूभर हो गया था। ऐसे दौर भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, लाला लाजपत राय, करतार सिंह सराभा, रानी लक्ष्मीबाई, खुदीराम बोस जैसे वीर सपूतों ने भारत माँ को गुलामी की जंजीरों से आजाद कराया। उन्होंने कहा कि इस आजादी को पाने के लिए देश की हजारों माताओं ने अपने लाल कुर्बान किये हैं, हमें उनकी कुर्बानी को कभी नहीं भूलना चाहिए और हमेशा शहीदों का सम्मान करना चाहिए।

कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।

न्यायपालिका के निर्णय आने से पूर्व सहस्रों वर्षों से दुष्ट बाबर के अनुयायी व मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के रामवादियों के मध्य विवाद था। इस विवाद में सत्य सनातन वैदिक धर्म के अनुयायी हम आर्य लोग जो वैदिक धर्म के सेवक, संसार-मर्यादाव्यवस्थापक, लोकसंग्राहक, परोपकारक, पुरुषरत्न का एकत्र एकीकृत सन्निवेश, अखिलार्यनिषेवितपादपद्म श्रीराम को अपना आदर्श मानते हैं, उन सबको श्रीराम के स्मारक के पक्ष में होना चाहिये या दुष्ट आततायी बाबर के पक्ष में होना चाहिये ?

अवश्य ही वैदिक धर्म के महान् स्तम्भ श्री राम के पक्ष में होना चाहिये। यदि श्रीराम के जन्मस्थल पर बाबरी मस्जिद बनती तो क्या आप वहां यज्ञशाला, गुरुकुल आदि को स्थापित करने की इच्छा भी कर पाते ? सब जानते हैं कि ऐसी इच्छा करना सर्वथा असम्भव है। और अब हम श्रीराम के स्मारक स्थल पर श्रीराम जो कार्य करते थे उनसे सम्बन्धित वैदिक कार्यशालाओं के निर्माण की इच्छा व्यक्त कर सकते हैं क्योंकि नवीन पुराणों के अनुयायी पौराणिक बन्धु कितने भी सिद्धान्तानभिज्ञ हों तथापि वे वैदिक धर्म की परिधि के अन्तर्गत आते हैं। इसलिये उनसे गुरुकुल व यज्ञशाला आदि के निर्माण की वार्त्ता की जा सकती है और यदि वे नहीं सुनते हैं तो वेद का प्रचार-प्रसार करते हुए सच्चे वैदिक धर्म के मानने वालों की वृद्धि करो तब एक दिन आयेगा कि हम श्रीराम के अनुरूप उनका सच्चा स्मारक बना पायेंगे।

हमें यह ध्यान रखना होगा कि हम जब पूर्ण शक्ति से श्रीराम के जन्मस्थल पर उनके स्मारक का समर्थन करते हुए आमोद-प्रमोद करें तब अवतारवाद, मूर्तिपूजा आदि दोषों से सर्वथा दूर रहकर हमारे विचारों से सत्य सनातन वैदिक धर्म के ऋषिनिर्मित सत्संग आर्यसमाज का सुगन्ध बहना चाहिये तभी हम **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** की ओर अग्रसर होकर विश्व को वैदिक धर्म की छत्रछाया में लाकर सर्वत्र सुख, शान्ति व आनन्द की गंगा प्रवाहित कर सकते हैं ।

निश्चित तौर पर राम मंदिर निर्माण का फैसला सर्वोच्च न्यायालय ने दिया मगर राम मंदिर निर्माण में देश की मौजूदा भाजपा सरकार और लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की भूमिका भी अहम रही है जिससे समस्त राष्ट्र में उत्साह का माहौल है।

साभार : आचार्य विष्णुमित्र 'मेधार्थी'

कोरोना से बचने के लिए यज्ञ करें

मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य भोजन कर न केवल अपनी भूख को दूर करता है अपितु इससे उसे बल व शक्ति की प्राप्ति भी होती है। बच्चे दुग्ध, फलाहार व भोजन करते हैं जिससे उनको बल व शक्ति सहित शारीरिक वृद्धि की प्राप्ति होती है। जिनको अच्छा भोजन, गोदुग्ध, फल तथा बादाम, काजू, छुआरे आदि मेवे व फलों की प्राप्ति नहीं होती वह कुछ कमजोर व यदा-कदा सामान्य ज्वर, खांसी तथा उदर रोगों आदि से ग्रस्त देखे जाते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि हम भोजन में जो पदार्थ लेते हैं उसका सम्बन्ध हमारे आरोग्य और शारीरिक रक्षा सहित बल व शक्ति से होता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिये भोजन, व्यायाम व प्राणायाम सहित ईश्वर के ध्यान-चिन्तन पर भी हमें अपना ध्यान एकाग्र करना चाहिये। इससे मनुष्य का स्वास्थ्य अन्यों की तुलना में अधिक अच्छा हो सकता है।

आजकल समाज में पहले से अधिक जाग्रति है। पूरा विश्व योग एवं शाकाहार जीवन पद्धति को अपना रहा है तथा स्वस्थ जीवन सहित सुख व शान्ति भी प्राप्त कर रहा है जो मांस भक्षियों, मदिरा पान करने वालों, तला हुआ तथा तामसिक भोजन करने वालों को कदापि प्राप्त नहीं हो सकती। हमें यह देखकर भी आश्चर्य होता है कि धनिक लोग अनेक रोगों से ग्रस्त देखे जाते हैं जबकि आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने के कारण वह निर्धनों से अधिक स्वास्थ्यप्रद भोजन कर सकते हैं। इसका कारण उनका अनियमित जीवन, तामसिक भोजन व चटोरापन प्रतीत होता है। स्वास्थ्य के लिये हमें आहार व विहार में सन्तुलन रखना आवश्यक है। प्राकृतिक नियम किसी की आर्थिक सम्पन्नता या बड़े पद को देखकर पक्षपात नहीं करते। ईश्वर के नियम निर्धन व धनवान, विद्वान व अनपढ़ तथा समर्थ व असमर्थ सबके लिये समान हैं। ईश्वर व प्रकृति के इन नियमों में किसी से पक्षपात नहीं होता। जो लोग ईश्वर को नहीं मानते वह भी अनेकानेक रोगों व कष्टों से त्रस्त होते हैं और अल्पायु का शिकार होते हैं। उनके पास इसका कोई उपाय नहीं होता तथापि वह अपनी अविद्या, हठ व दुराग्रह को छोड़ने के लिये तत्पर नहीं होते।

अग्नि का काम पदार्थों को जलाना वा सूक्ष्म कर उसे वायुमण्डल व आकाश में फैलाना होता है। जो पदार्थ जितना अधिक सूक्ष्म होता है वह उतना अधिक प्रभावशाली होता है। हम देखते हैं एक मिर्च जिसको आसानी से खाया जा सकता है, उसे यदि अग्नि में डाल दिया जाये तो उसका प्रभाव बढ़ जाता है। एक मिर्च के जलने से उस स्थान पर सैकड़ों लोगों का उपस्थित रहना कठिन हो जाता है। सब खांसने लगते हैं। उसकी गन्ध सबको अप्रिय लगती है। वह किसी से सहन नहीं होती। यह अग्नि में मिर्च डालने पर प्रत्यक्ष अनुभव किया जाता है। इसी प्रकार से अग्नि में जो भी पदार्थ डाला जाता है उसका प्रभाव मिर्च की ही भांति वृद्धि व प्रसार को प्राप्त होता है। मनुष्य को स्वस्थ रहना है। वह शुद्ध व पौष्टिक भोजन सहित ओषधियों, गोदुग्ध एवं गोघृत आदि के सेवन से स्वस्थ रहता है। अतः वेद और हमारे ऋषियों ने इस विषय का विवेचन कर अग्निहोत्र यज्ञ का आविष्कार किया जो सृष्टि के आदिकाल से निरन्तर चला आ रहा है।

महाभारत के बाद अग्निहोत्र यज्ञ में कुछ शिथिलता तथा विकृतियां आई परन्तु ऋषि दयानन्द ने सभी विकृतियों का देश की प्रजा को परिचय कराया व उन्हें दूर करके अग्निहोत्र यज्ञ के लाभों से हमें परिचित कराया। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन प्रातः व सायं अग्निहोत्र देव यज्ञ करना प्रत्येक गृहस्थी का कर्तव्य व धर्म है। देवयज्ञ को उन्होंने व उनके पूर्व ऋषियों ने महायज्ञ की उपाधि दी है और इसका क्रम ईश्वरोपासना के बाद तथा पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ एवं बलिवैश्वदेव यज्ञ से पहले रखा गया है। उन्होंने यह भी बताया कि जब तक भारत के सभी घरों व परिवारों में यज्ञ होता था तब तक सभी लोग स्वस्थ व निरोग रहने के साथ सुख-समृद्धि से युक्त रहते थे। यदि अब भी सभी यज्ञ करें तो पुनः स्वस्थ, निरोग एवं सुखों से युक्त हो सकते हैं।

यज्ञ करते हुए अग्नि में स्वास्थ्य रक्षा और वायुमण्डल की शुद्धि को ध्यान में रखते हुए चार प्रकार के द्रव्यों की आहुतियां दी जाती हैं। इनमें यज्ञ की मुख्य सामग्री अर्थात् हव्य द्रव्य देशी गाय का घृत होता है। घृत में रोगी मनुष्य को स्वस्थ करने, वायु प्रदुशण दूर करने, रोग कृमियों, बैक्टिरिया, वायरस तथा जर्म्स सहित सभी प्रकार के विष वा विषाणुओं को को नष्ट करने का भी गुण होता है। घृत को अग्नि में आहूत करने से दुर्गन्ध का नाश होता है तथा सुगन्ध का प्रसार होता है। ऐसे अनेकानेक अगणित लाभ गोघृत से यज्ञ करने से होते हैं। यह सभी लाभ अग्निहोत्र यज्ञ करने वालों को प्राप्त होते हैं। घृत के अतिरिक्त केसर व कस्तूरी आदि पदार्थों को भी यज्ञद्रव्यों में सम्मिलित किया गया है।

इनका भी अपना प्रभाव होता है। यज्ञ में दूसरा मुख्य पदार्थ देशी शक्कर होता है। इसमें स्वास्थ्य रक्षा एवं रोगनाश सहित कृमियों का नाश करने का गुण होता है। यज्ञ का तीसरा पदार्थ वा सामग्री वनों से प्राप्त होने वाली औषधियां व किसानों द्वारा उगाई जाने वाली वनस्पतियां होती हैं जिनसे प्रत्यक्ष रूप से हम स्वस्थ रहने सहित रोग निवृत्त भी होते हैं। यज्ञ सामग्री में गुग्गल, गिलोय, अगर, तगर तथा अनेक रोगों में लाभदायक औषधियां को मिलाया

जाता है। अग्नि में आहुति डालने से यह अत्यन्त सूक्ष्म, हल्की व भाररहित होकर पूरे आवास एवं वायुमण्डल में फैल जाती हैं। वायु के द्वारा यह दूर-दूर तक पहुंच कर रोगों का नाश करती हैं। यज्ञ के प्रसंग में यहां तक कहा जाता है कि यज्ञ की सूक्ष्म आहुति सूर्य की किरणों के सम्पर्क से सूर्य तक पहुंच जाती है। इस प्रकार यज्ञ करने से अनेकानेक लाभ होते हैं और यज्ञकर्ता को पुण्य मिलता है जिसका परिणाम उसका जन्म-जन्मान्तर में कल्याण व धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होती है।

यज्ञ करने से रोगों से रक्षा होती है। वेदभाष्यकार आचार्य डा. रामनाथ वेदालंकार जी ने यज्ञ-मीमांसा नामक एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा है। यह ग्रन्थ सभी ऋषिभक्तों एवं आर्यसमाजियों को अवश्य पढ़ना चाहिये। इस ग्रन्थ में वह लिखते हैं कि 'बाह्य लाभों की दृष्टि से यह (अग्निहोत्र यज्ञ) वायुमण्डल को शुद्ध करता है और रोगों तथा महामारियों को दूर करता है।' आचार्य जी ने यज्ञ से रोगोत्पादक कृमियों के विनाश पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है। उन्होंने बताया है 'अथर्ववेद 1/2/31-32, 4/37 तथा 5/23, 5/29 में अनेक प्रकार के रोगोत्पादक कृमियों का वर्णन आता है।

यहां इन्हें यातुधान, क्रव्याद्, पिशाच, रक्षः आदि नामों से स्मरण किया गया है। ये श्वासवायु, भोजन, जल आदि द्वारा मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट होकर या मनुष्य को काटकर उसके शरीर में रोग उत्पन्न करके उसे यातना पहुंचाते हैं। अतः ये 'यातुधान' हैं। शरीर के मांस को खा जाने के कारण यह 'क्रव्याद्' या 'पिशाच' कहलाते हैं। इनसे मनुष्य को अपनी रक्षा करना आवश्यक हो जाता है। इसलिये ये 'रक्षः' या 'राक्षस' हैं। यज्ञ द्वारा अग्नि में कृमि-विनाशक औषधियों की आहुति देकर इन रोग कृमियों को विनष्ट कर रोगों से बचाया जा सकता है।'

आजकल न केवल हमारा देश वरन् पूरा विश्व कोरोना रोग व महामारी से त्रस्त है। इस महामारी पर विजय का कोई उपाय नहीं मिल रहा है। सृष्टि के ज्ञात इतिहास में यह सबसे बड़ा वैश्विक संकट है। दु:ख है कि भारत के कुछ राजनीतिक दल इस अवस्था में भी देश के प्रधानमंत्री व सरकार को सहयोग देने के स्थान पर राजनीति व षडयन्त्र कर रहे हैं। उनका व्यवहार देश के लिये हितकारी न होकर शत्रुओं की भांति है। प्रधानमंत्री जी के कुशल नेतृत्व में रोगों को समाप्त करने के सभी आवश्यक उपाय किये गये हैं। कुछ लोग संगठित रूप से नानाविध असहयोग भी कर रहे हैं। इस स्थिति में भी भारत ने विश्व के अनेक देशों की तुलना में कोरोना के व्यापक प्रभाव को रोकने में अपनी महनीय भूमिका निभाई है। इसके लिये प्रधानमंत्री मोदी, सभी कोरोना योद्धा एवं आवश्यक सेवाओं के कर्मी बधाई के पात्र हैं। सामजिक संस्थायें जो भोजन वितरण का कार्य कर रहीं हैं, वह भी बधाई की पात्र हैं।

कोरोना को भगाने के लिए अमृतसर की शक्तिनगर आर्यसमाज ने पहल करके अमृतसर में सभी आर्य परिवारों के द्वारा दिनांक 26-4-2020 को सायं 5.00 बजे पारिवारिक यज्ञ अयोजित कराये थे। इन यज्ञों के चित्र व वीडियो आर्यसमाज शक्तिनगर-अमृतसर के व्हटसप ग्रुप में डाली गई थी। देहरादून में भी इस आयोजन को सफल बनाने के लिये अपने सभी मित्रों को प्रेरित किया था। गुरुकुल पौंधा-देहरादून में इस दिन व समय पर 130 लोगों ने मिलकर कोरोना से बचाव के नियमों का पालन करते हुए अग्निहोत्र किया था। पंजाब केसरी की एक संस्था की ओर से इसकी एक सारगर्भित एवं प्रभावशाली वीडीयो बनाकर भी प्रसारित की गई है। इसकी सफलता का असर पूरे देश की समाजों व संस्थाओं पर पड़ा। इससे प्रेरित होकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने भी ऐसा ही एक कार्यक्रम रविवार दिनांक 3-5-2020 को प्रातः 9.30 बजे से करने की देश विदेश के सभी आर्यो को प्रेरणा की है। इस प्रेरणा के लिये सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी विश्व की सभी आर्यसमाजों के धन्यवाद एवं सम्मान पात्र हैं।

यशस्वी श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी श्री वंशीधर अग्रवाल आर्य जी के सुपुत्र हैं। श्री वंशीधर जी देहरादून के वैदिक साधन आश्रम तपोवन के वर्षो तक प्रधान रहे। वह सत्यप्रकाशन तथा वेदमन्दिर, मथुरा से जुड़ी संस्थाओं के भी प्रधान थे। हमने उनकी उदारता व ऋषिभक्ति की बातें वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के संस्थापक न्यासी श्री भोलानाथ आर्य जी के श्रीमुख से अनेकों बार सुनी हैं। हम श्री सुरेश आर्य जी का हृदय से सम्मान करते हैं। महाशय धर्मपाल आर्य जी भी आर्यसमाज की एक दिव्य विभूति हैं। उनकी ऋषि भक्ति समर्पण एवं सेवा प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है। सभाओं व संस्थाओं में अनेक प्रकार के लोग होते हैं। वैदिक धर्म के प्रचार व विस्तार का शुभ व अच्छा काम कोई भी करे, सभी आर्यसमाजियों को उसको सहयोग एवं समर्थन देना चाहिये। कोई विकल्प भी किसी के पास नहीं है। अतः यह पहला आयोजन है जो घर में बैठकर हुआ और जिसके प्रति सभी आर्यो में अत्यन्त उत्साह दिखा। हम इस आयोजन की सफलता पर बधाई देते हैं।

यज्ञ से निश्चय ही वायरसों व बैक्टिरियाओं का नाश होता है। कोरोना पर भी इसका पूर्ण या कुछ कम असर अवश्य ही पड़ेगा। इससे हमारे संगठन में भी प्राण शक्ति का संचार होगा। ईश्वर से की गई प्रार्थनायें भी फलदायक होती हैं। इन दोनों के मिलने से हम समाज व देश में एक चमत्कार की आशा रखते हैं। हमें ऋषियों के पंचमहायज्ञों के अन्तर्गत प्रातः व सायं प्रतिदिन देवयज्ञ करने के आदेश को अपने जीवन में चरितार्थ करना चाहिये। इससे निश्चय ही देश व विश्व को लाभ होगा।

मनमोहन कुमार आर्य
वरिष्ठ आर्य विद्वान, देहरादून

क्यों करें सत्कर्म?

चिन्ता मनुष्य को दीमक की तरह अन्दर से खोखला कर देती है। चिन्ता बी.पी., शुगर जैसी बीमारियों को जन्म देकर मनुष्य को चिता की ओर धकेल देती है। चिन्ता और चिता में केवल एक बिन्दु का फासला है लेकिन फिर भी मनुष्य सदैव अपने कर्मफलों की चिन्ता में दु:खी रहता है। हर व्यक्ति स्वतंत्रकर्ता के रूप में किसी भी कार्य को करने ना करने वा अन्यथा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतंत्र होने के कारण अपने द्वारा संपादित हर कर्म का कर्त्ता और कर्त्ता होने के कारण ईश्वरीय न्याय-व्यवस्था में उसके फल का भोक्ता होता है। हर मनुष्य अपने द्वारा किये गये दुष्कर्मो को भली भांति जानता है और यह भी मानता है कि उसके दुष्कर्मो का फल ईश्वरीय न्याय-व्यवस्था में दण्डस्वरूप किसी विपत्ति, कष्ट के रूप में अवश्य मिलेगा।

हम सभी '**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्**' के सिद्धान्त से परिचित हैं। यह हमारे लिए संभावित फलों की चिन्ता का एक प्रमुख कारण है। चिन्ता का दूसरा कारण उस फल की चिन्ता है जिसे हम प्राप्त करना चाहते हैं। बिना पुरुषार्थ किये वांछित लक्ष्य की प्राप्ति की चिन्ता हमें बहुत सताती है। चिन्ता करने से लक्ष्य की दूरी और अधिक बढ़ जाती है। कर्म करने से मनुष्य उतना नहीं थकता जितना उस कर्म को करने व फल की प्राप्ति की चिन्ता से थक जाता है। सीधे सरल शब्दों में चिन्ता हमारे कार्य करने की ऊर्जा को क्षीण कर देती है और चिन्ता में परेशान व्यक्ति बिना कार्य को प्रारम्भ किये ही हतोत्साहित होकर थक कर बैठ जाता है। अब प्रश्न उठते हैं :-

1. **क्या बिना फल की कामना के कर्म सम्भव है?**
2. **क्या फल की चिन्ता करनी चाहिए?**
3. **फल की चिन्ता ना करें तो क्या करें?**

योगेश्वर श्रीकृष्ण ने तो विवाद में फंसे अर्जुन को गीता का सन्देश देते हुए निष्काम भाव से किये गये परोपकार के यज्ञीय कार्यो को सर्वश्रेष्ठ कर्मो की श्रेणी में रखा। यह ठीक है कि फल की कामना चिन्ता का मुख्य कारण बनती है और ऐसे कर्म साधारणतया मनुष्य के स्वयं के स्वार्थ के वशीभूत होते हैं। वैसे भी '**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन**' कहकर योगेश्वर श्रीकृष्ण ने मनुष्य द्वारा कर्त्ता के रूप में कर्म करने पर तो अधिकार बताया है परन्तु फल की प्राप्ति के लिए कर्म का कर्त्ता ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के ही आधीन है अत: जब फल देना हमारे अधिकार क्षेत्र की बात है, उस कर्म को ना करके अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर की चिन्ता किसी भी व्यक्ति को उसे लक्ष्य तक कैसे ले जा सकती है। जैसे एक परीक्षार्थी के लिए परीक्षा की विषयवस्तु का ज्ञान लेना, पढ़ना और परीक्षा देना तो उसके अधिकार में आता है परन्तु परीक्षाफल तो परीक्षक के अधिकार की बात है।

ब्र0 शिवम् शास्त्री

फल की व्यर्थ चिन्ता तो हमें उस बन्दर की तरह बना देती है जो रोजाना आम की गुठली को खोदकर देखता है कि पेड़ बना या आम लगा या नहीं। इस प्रकार वह उसे अंकुरित भी नहीं होने देता। हमारे कर्म तो बीज की तरह हैं, जिन्हें हम खेत में पुरुषार्थ का हल चलाकर बो देते हैं और फिर अपनी ओर से कर्म करते हुए खाद-पानी, दवा आदि से तैयार करते हैं लेकिन हमारे कर्मो के फलों की फसल तो समय आने पर ही तैयार होती है। यहाँ यह भी स्पष्ट है कि यदि हमने बबूल के बीज बोयें है तो आम की फसल कभी नहीं होगी अर्थात् जैसा कर्म करेगा वैसा फल देगा भगवान।

फल की चिन्ता में हमारी हालत वैसी हो जाती है जैसे हम गाड़ी के साथ सामान का बोझ नीचे रखकर उस पर बैठने के स्थान पर बोझों को सिर पर उठाकर बैठें हों। न्याय व्यवस्था में हमारे कर्मो का फल देना ईश्वर पर छोड़ देना ही उचित है। हमें तो केवल अपने अधिकार क्षेत्र अर्थात् अपने द्वारा सम्पादित होने वाले कर्मो का चिन्तन मनन करना चाहिए क्योंकि कर्मो की दिशा यानि चलने का रास्ता उल्टा होगा तो हम अपने लक्ष्य से दूर होते चले जायेंगे। वैसे भी स्वार्थ के वशीभूत किये गये कर्मो के फल की चिन्ता हमें उन कर्मो से लिप्त कर देती है और वह कर्म हमारे बंधन का कारण बनते हैं। जैसे यदि एक मधुमक्खी पराग चुनकर बनाये गये उस मधु का स्वाद लेने के लिए उसमें लिप्त हो जाये तो उसी शहद में फंसकर मर जाती है।

अब अन्त में प्रश्न आता है कि हम फल की चिन्ता ना करें तो क्या करें? इसका सीधा सरल उत्तर है कि हम मनुष्यों को अपने अधिकार क्षेत्र अर्थात् स्वतंत्रकर्ता के रूप में केवल अपने कर्म के सम्पादन से पूर्व उस पर चिन्तन मनन करना चाहिए और निष्काम भाव से यज्ञीय व परोपकार के सर्वहितकारी कार्यो को करते हुए फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण आस्था रखते हुए उसकी चिन्ता उसी पर छोड़ देनी चाहिए।

- ब्र0 शिवम् शास्त्री
आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

क्यों पढ़ी जाए संस्कृत?

एक स्वयंभू मोटिवेशनल स्पीकर ने वर्तमान परिवेश में संस्कृत की उपयोगिता पर सवाल उठाते हुए एक नई चर्चा को जन्म दे दिया है। हालांकि सोशल मीडिया पर हुई कड़ी आलोचना के बाद इन महाशय ने अपनी गलती न केवल स्वीकार की बल्कि लोगों से सार्वजनिक तौर पर माफी भी मांगी। इन सबके बीच हमारे लिए संस्कृत का पठन-पाठन क्यों जरूरी है, आइए जानते हैं।

संस्कृत भाषा में भारत की सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित है और इसलिए इस पर ध्यान देना स्वाभाविक है। संस्कृत की उपेक्षा हमें उस विरासत से विलग कर देती है। शाब्दिक रूप से 'संस्कृत' का अर्थ है तैयार, शुद्ध, परिष्कृत, श्रेष्ठ आदि। इसे देववाणी भी कहा जाता है। ऐसा कह कर कई लोग अज्ञानवश इसे सिर्फ पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड से जुड़ा मान बैठते हैं। इसके चलते इस भाषा को 'अवैज्ञानिक तथा परलोकवादी' करार दे कर अनुपयोगी कर खारिज कर देते हैं। यह अलग बात है कि इसका केवल पांच-सात प्रतिशत साहित्य ही इस तरह का है। दूसरी ओर एक बड़ी सच्चाई यह है कि इसके अंतर्गत सुरक्षित षड् दर्शनों को जाने बिना हम उस चिन्तन तक नहीं पहुंच सकते जो भारत देश की संस्कृति का मूल आधार बना हुआ है।

यह कहना गलत नहीं होगा कि संस्कृत वाङ्मय हजारों वर्षों पुरानी भारतीय सभ्यता का एक सजीव और मूर्त रूप है। यह भाषा किसी न किसी रूप में केरल से चलकर कश्मीर और कामरूप से चलकर सौराष्ट्र तक सभी क्षेत्रों के लोगों के जीवन में महत्त्वपूर्ण और पावन क्षणों में उपस्थित रहती है। यह अन्दर से बिन प्रकट हुए सबको बांधने का काम करती है और ज्ञान के आलोक से सबको प्रकाशित करती है। यह सबकी एक सांझी विरासत है और इस अर्थ में अत्यन्त व्यापक है कि यह स्थानीयता के आग्रह से पार जाती है। इसमें इतिहास का पश्चिमी मोह नहीं है और देश काल का अतिक्रमण कर सबका समावेश कर पाने की क्षमता विद्यमान है। इसके सरोकार व्यापक है और यह साहित्य, पर्यावरण, शिक्षा, ज्ञान तथा मानव गरिमा की रक्षा करने के लिए तत्पर है। इसी को ध्यान में रख कर भारत की शिक्षा नीति जो 1968 में और फिर 1986 में प्रस्तुत की गई थी, उसमें स्पष्ट रूप से संस्कृत के अध्यन के महत्त्व को स्वीकार करते हुए देश की सांस्कृतिक विरासत व प्राचीन ज्ञान को आगे की पीढ़ियों तक पहुंचाने के लिए संस्कृत की शिक्षा को आवश्यक माना गया है।

ब्र0 रवि शास्त्री

इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि एक भाषा के रूप में संस्कृत अनेक भारोपीय भाषाओं की जननी है और उनके साथ गहराई से जुड़ी हुई है। भाषा की व्यवस्था को देखने पर उसकी वैज्ञानिकता अनेक अध्येताओं ने असंदिग्ध रूप से स्थापित की है। भाषा वैज्ञानिकों के लिए यह अभी भी एक चुनौती बनी हुई है परन्तु प्रतीकों के उपयोग की संस्कृत भाषा केवल एक पक्ष है। इससे भी अधिक यह एक व्यापक विचार पद्धति और जीवनशैली की व्यवस्था भी प्रस्तुत करती है। संस्कृत की विशाल और दैविध्यपूर्ण ज्ञान-राशि में वेद, पुराण, उपनिषद्, आरण्यक, रामायण, महाभारत ही नहीं बल्कि शंकर, रामानुज, माध्व गौतम, कपिल, जैमिनी जैसे महान दार्शनिक, पाणिनी, कात्यायन, भर्तहरि जैसे वैयाकरण, पतंजलि जैसे योगगुरु, आर्यभट्ट, ब्रह्म गुप्त और भास्कर जैसे गणितज्ञ, चरक और सुश्रुत जैसे महान आयुर्वेदज्ञ, भरत जैसे नाट्यविद और वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, भास, व्यास, वाणभट्ट और दंडी जैसे अनेकानेक सर्जकों के अनेक विशिष्ट और उल्लेखनीय अवदान भी हैं। इनमें से बहुतों की वैज्ञानिकता, तर्ककुशलता, जीवन में उपयोगिता और अकादमिक मूल्यवत्ता, देश-विदेश के अध्येताओं को सदियों से आकर्षित करती रही है।

इस क्रम में श्रीमद्भगवतगीता का नाम सबसे ऊपर आता है। इस पुस्तक ने विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को देश ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी निरन्तर प्रेरित किया है। आज भी उसका महत्त्व कम नहीं हुआ है। इसी तरह श्रीमद् भागवत जैसे ग्रंथों ने बाद के कवियों और चिन्तकों को प्रभावित किया है। प्राच्य विद्या के रूप में संस्कृत के विविध पक्षों पर विदेशों में अनेक विश्वविद्यालयों में शोध और अध्ययन का कार्य हो रहा है, परन्तु भारत में इसकी उपेक्षा चिन्ता का विषय है।

इसकी उपेक्षा कई कारणों से है जिनमें संस्कृत को लेकर

(...शेष पृष्ठ 21 पर पढ़ें)

महर्षि दयानन्द का सपना और आर्यसमाज

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्वप्न और उद्देश्य था "देश, देशान्तरों में सर्वत्र वैदिक धर्म तथा भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्ष का प्रचार एवं प्रसार हो।" महाभारत के पश्चात् ऋषि निराले महापुरुष थे, जिन्होंने देश को स्वत्व, स्वधर्म, स्वदेश, स्वसंस्कृति, स्वभाषा आदि बोध कराया। उन्होंने वैचारिक समग्र क्रान्ति का शंखनाद किया। वैदिक धर्म की जगह नाना पंथों, सम्प्रदायों, ईश्वर की जगह अनेक देवी-देवताओं तथा गुरुओं की पूजा हो रही थी। चारों ओर घोर अज्ञान, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास आदि फैला हुआ था।

ऐसी परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द ने समस्त अवैदिक मिथ्या बातों को मिटाने तथा हटाने के लिए क्रान्तिकारी विचारधारा की ज्वाला प्रज्वलित की जो आर्यसमाज कहलाया। आर्यसमाज कोई पंथ, सम्प्रदाय व गद्दी नहीं है। इसके सभी मन्तव्य, आदर्श तथा मान्यताएँ सार्वजनिक व्यावहारिक, वैज्ञानिक तर्क, युक्ति आदि पर आधारित हैं।

आर्यसमाज ऋषि दयानन्द की विचारधारा, सिद्धान्तों, आदर्शों, विरासत और वसीयत का उत्तराधिकारी हैं। जिन उद्देश्यों और आदर्शों की पूर्ति के लिए ऋषि ने अनेक बार जहर पिया, पत्थर खाए, अपमान सहा, गालियाँ सुनी, सम्पूर्ण जीवन संघर्ष करते हुए आहूत कर दिया। ऐसे महामानव का जीवन स्मारक आर्यसमाज है। सच है कि आर्यसमाज की स्थापना के बाद स्वामी जी को बहुत थोड़ा समय मिला। वे असमय में हमसे विदा हो गये। ऋषि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रभावित दीवाने, जुनून वाले अनुयायियों ने अपना घर-बार, जवनी और सर्वस्व देकर आर्यसमाज को राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सुधारक आदि क्षेत्रों में बुलन्दियों पर पहुँचा दिया। आर्यसमाज के आरम्भिक काल के लोगों में तप, त्याग, सेवा, आदर्श, बलिदान, ऋषिभक्ति आदि के प्रेरक प्रसंग तथा उदाहरण पढ़ते और सुनते हैं तो हृदय श्रद्धाभक्ति व भावना से नत हो उठता है। भावविभोर होकर आंखे छलकने लगती है।

आह! आर्यसमाज का अतीत, कितना स्वर्णिम, गौरवपूर्ण, प्रेरक तथा आकर्षक था। चारों ओर ऋषि दयानन्द का चुम्बकीय आकर्षण तथा जादू सबके सिर पर चढ़कर बोल रहा था। अतीत का जितना भी गुणगान करें, थोड़ा है। वर्तमान पर जितनी चिन्ता और प्रश्नचिन्ह लगाएं, वे भी कम हैं।

मुख्य कार्य वेद प्रचार : आर्यसमाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्यधर्म का प्रचार करना है। वेद प्रचार आर्यसमाज का नाम धरोहर तथा वसीयत है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और कोई विचारधारा नहीं मानती है। वेद मंदिर, वेद कथा, वेद सम्मेलन तथा प्रातः पवित्र वेद मंत्रों के द्वारा सुन्दर विधि-विधानयुक्त यज्ञ होता है और सबको पढ़ने-सुनने का अधिकार है। नारी वेद पढ़ सकती है, पढ़ा सकती हैं। यज्ञ की ब्रह्मा बन सकती है। वेद परमात्मा का आदेश, उपदेश तथ संदेश है। आज दुनिया में 98 प्रतिशत ऐसे लोगे हैं जिन्होंने न वेद देखें है, न पढ़ें है और न ही सुने हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदोद्धार के लिए आर्यसमाज बनाया था। वेदज्ञान ही संसार को मानवता और जीवन जगत का सीधा, सच्चा एवं सरल मार्ग दिखा सकता है। वेद का चिन्तन व संदेश सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वजनिक तथा सार्वदेशिक है। यदि भूले-भटके संसार को कोई सुख-शान्ति एवं आनन्द का सच्चा मार्ग दिखा सकता है तो केवलमात्र वह वेदमार्ग है।

जसविन्द्र आर्य

आर्यसमाज का असली काम छूट रहा है। ये सभा, संगठन, संस्थाएं, स्कूल, डीएवी आदि आर्यसमाज की विचारधारा के प्रचार-प्रसार, मानव निर्माण तथा वेद प्रचार के लिए बनाये गये थे। जहाँ व्यक्ति के संस्कार, विचार और चरित्र निर्माण की शिक्षा-दीक्षा दी जाती है। आज समाज मंदिरों में वेदाध्ययन शालाएँ कोई नहीं खोल रहा है। वेद प्रचार घट रहा है। इससे जनता से सम्पर्क कट रहा है। जबसे सम्पत्तियां, स्कूल, दुकानें, एफ.डी., आदि की आमदनी बढ़ी है तब से विवाद, संघर्ष तथा पदलोलुपता आदि अधिक बढ़ रही है। कथनी और करनी में अन्तर बहुत तेजी से आ रहा है। जो आर्यसमाज कभी सत्य, ईमानदारी और विश्वसनीयता के लिए उदाहरण बनता था, वैसी पहचान आज हमारी नहीं बन पा रही है।

आर्यसमाज का उदय झूठ, पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुडम आदि के विरोध के लिए हुआ। इसका नारा था-जागते रहो। जागते रहो। इतिहास साक्षी है कि आर्यसमाज ने ढोंग, अन्धश्रद्धा तथा गलत बातों का सदा विरोध किया है। आज संसार में बड़ी तेजी से मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अन्धविश्वास, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम, गुरुमहन्त आदि तेजी से फल-फूल व बढ़ रहे हैं। कोई विचाराधारा वाला इन गलत बातों का खण्डन नहीं कर रहा है। क्योंकि सभी ने अपनी दुकानदारी, पुजापा, चढ़ावा आदि चलाना है। केवलमात्र आर्यसमाज एक ऐसा संगठन है जो मिथ्या बातों का शुरु से ही विरोध करता आ रहा है। यदि आर्यसमाज भी समझौतावादी और

सनातनी बन गया तो इन ढोंगियों, पाखण्डियों, स्वयंभू गुरुओं, महन्तों, महाराजाओं आदि से धर्मभक्ति तथा परमात्मा के नाम पर भोली-भाली जनता को लूटने से कौन बचाएगा ?

प्रतिवर्ष आर्यसमाज स्थापना दिवस हमें जगाने और सम्भालने आता है। जिस उद्देश्य, कर्त्तव्य एवं प्राप्ति के लिए संस्था का निर्माण किया गया था। उस दिशा में क्या खोया और क्या पाया है, कितना हम आगे बढ़े हैं। नहीं बढ़े हैं, तो क्या कारण रहे हैं, जिससे हम उद्देश्य की दिशा में पिछड़ रहे हैं। उन बातों का चिन्तन एवं मनन करना चाहिए। वर्तमान आर्यसमाज की त्रासदी एवं विडम्बना है कि जो होना चाहिए वह नहीं हो रहा है। जो नहीं होना चाहिए वह तेजी से हो रहा है। जिन बातों का ऋषि ने निषेध किया था, वे ही बातें अधिकांश में हो रही हैं। सभा, संगठन, संस्थाओं आदि की मीटिंगों में वैदिक धर्म की रक्षा, ऋषि-सिद्धान्त, मिशन, वेद प्रचार आदि की पीड़ा, चिन्ता व बेचैनी, कहीं नजर नहीं आती। व्यर्थ के विवादों, झगड़ों, समस्याओं आदि में समय, शक्ति तथा धन व्यय हो रहा है। ऋषि ने एक स्थान पर कहा था -'यदि आर्यसमाज अपने उद्देश्य को लेकर न चला, तो वह भी एक सम्प्रदाय बनकर रह जाएगा और सब गड़बड़ाध्याय हो जाएगा' सत्य में यही हो रहा है।

आर्यसमाज स्थापना दिवस हमें प्रेरित कर रहा है। आर्यो ! उठो ! जागो ! अपने को संभालो ! कुछ बनो और कुछ करो। दुनिया हमारी ओर देख रही है। आर्यसमाज जैसी मातृसंस्था और ऋषि जैसा मार्गदर्शक और कहीं न मिलेगा। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' से पहले 'कृण्वन्तो स्वयंमार्यम्' को चरित्रार्थ कर लें, तो निश्चित रूप से स्थापना दिवस का उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा। हम सच्चाई तथा ईमानदारी से संकल्प और व्रत लें -'इदं आर्यसमाजाय इदं न मम' आर्यसमाज में सेवा, त्याग, नियम, सिद्धान्त तथा अनुशासन का निर्वाह व पालन करेंगे। यही आर्यसमाज का सन्देश है।

- जसविन्द्र आर्य
युवा भजनोपदेशक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

क्यों पढ़ें संस्कृत... पृष्ठ 19 का शेष

हीनता की भावना और इसे पुरातनपंथी मानना प्रमुख है। इसे केवल संग्रहालय की वस्तु मानना और इतिहास की वस्तु समझ कर आंखों की ओट कर देना किसी भी तरह विवेकपूर्ण नहीं कहा जा सकता। संस्कृत को पंथनिरपेक्षता के लिए खतरा मान बैठना और संकीर्ण मानना तथ्य पर आधारित न होकर रूढ़िगत धारणा है जो पूर्वाग्रह से ग्रसित है।

संस्कृत को खोने का मतलब है भारत का अतीत खोना, अपनी अस्मिता खोना और अकूत ज्ञान राशि से हाथ धो बैठना। संस्कृत की ज्ञान-राशि की यह विशेषता है कि उसमें अद्भुत किस्म की बहुलता है और विचारों का प्रजातंत्र है जिसमें विविधता का आदर और स्वीकार है। इन्हीं सब विशिष्टताओं के मद्देनजर भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने कभी कहा था कि 'अगर मुझसे पूछा जाए कि भारत का सबसे बड़ा खजाना क्या है और श्रेष्ठतम विरासत क्या है तो असंदिग्ध रूप से यही कहूंगा कि संस्कृत भाषा और साहित्य तथा जो कुछ उसमें है। यह उत्कृष्ट विरासत है और जब तक यह जीवित है, हमारे समाज के जीवन को प्रभावित करती है, तब तक भारत की मेधा अक्षुण्ण बनी रहेगी।'

यह याद रखना चाहिए कि भाषा केवल अक्षर और शब्द भण्डार की यांत्रिक व्यवस्था मात्र नहीं होती है। यह अपने साथ बहुत सारे विचार भी लाती है, दुनिया को देखने का एक नजरिया भी देती है और एक वैकल्पिक विश्व भी रचती है। संस्कृत की विरासत संभाल कर भारत, भारत रह सकेगा और समकालीन विमर्श में सार्थक उपस्थिति बना सकेगा। संगीत और कला के अनेक रूप की भव्य उपस्थिति इसका एक प्रमुख उदाहरण है।

(साभार : गिरीश्वर मिश्र, कुलपति महात्मा गांधी अंतरार्ष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय)

स्वयं रखें अपने ... पृष्ठ 12 का शेष

सरसों व नारियल के तेल से मालिश कराने से आपकी मांसपेशियां मजबूत होती है, शरीर की नई स्फर्ति उत्पन्न होती है। कई बार मानसिक तनाव और अधिक थकान होने पर मालिश कराने से बहुत लाभ मिलता है। शरीर की मालिश के लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र का नाड़ी बल्य तेलम् भी प्रयोग कर सकते हैं।

7) सकारात्मक रहें, तनाव से बचें : आधुनिक जीवनशैली में मनुष्य के पास परिवार तो क्या स्वयं के लिए भी समय नहीं है। बस पूरा दिन भागदौड़ लगी रहती है। ऐसे में कई बार लोगों को तनाव भी घेर लेता है। तनाव या डिप्रेशन की यह समस्या बड़े शहरों के लोगों में अधिक पायी जाती है। वर्तमान में जब पूरा विश्व कोरोना से लड़ रहा है, लोगों के काम-धंधे बन्द हो गये है, नौकरियाँ छूट गई हैं, घर-परिवार चलाना मुश्किल हो रहा है, ऐसी परिस्थितियों में बहुत से लोग डिप्रेशन का शिकार हो रहे हैं। मगर हमें हर परिस्थिति में स्वयं को मजबूत बनाए रखना है, अपने मन-मस्तिष्क में नकारात्मक विचारों को न आने दें, हमेशा सकारात्मक सोचें। विचार करें, चिन्तन करें और सकारात्मक सोच के साथ विषम परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करें, भगवान अवश्य कोई रास्ता निकालेगा।

संकलन : राजेश कुमार
मैनेजर, स्वा.श्र. प्रा. चिकित्सालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

प्रिय पाठकों ! यदि आप गुरुकुल-दर्शन पत्रिका के सदस्य हैं और किसी कारणवश आपको गुरुकुल दर्शन प्राप्त नहीं हो रही है तो मोबाइल 8689002402 पर सम्पर्क करें।

- व्यवस्थापक

कैसे करें दुधारू पशुओं की देखभाल?

बरसात के मौसम में अक्सर पशुओं में अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जिनका समय से उपचार न करने पर पशुपालक को भारी नुकसान हो सकता है। प्रस्तुत लेख में हम पशुओं में होने वाले विभिन्न रोग और उनके उपचार पर चर्चा करेंगें।

आजकल पशुपालन भी एक बड़े व्यवसाय के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। यदि पशुपालन में पशुओं के स्वास्थ्य और खानपान पर ध्यान दिया जाए तो पशुपालकों को अच्छी आमदनी के साथ-साथ कई अन्य लाभ भी मिल सकते हैं। इसके लिए पशुपालकों को समय-समय पर पशुओं में होने वाली बीमारियों और उनके उपचार संबंधी कुछ जानकारी भी हासिल करनी चाहिए। पशुओं में खुर और मुख की बीमारियां, खासकर फटे खुर वाले पशुओं में बहुत अधिक मात्रा में पाई जाती है। ये बीमारी भारत में काफी पाई जाती है व इसके चलते किसानों को काफी अधिक आर्थिक हानि उठानी पड़ती है क्योंकि पशुओं के निर्यात पर प्रतिबन्ध है व बीमार पशुओं से उत्पादन कम होता है। बीमार पशु दूध देने में भी आना-कानी करता है। ऐसे में पशुपालक के लिए यह रोग काफी दु:खदायी है।

इसके लक्षण क्या हैं?

1. बुखार

2. दूध में कमी

3. पैरों व मुख में छाले तथा पैरों में छालों के कारण थनों में शिथिलता।

4. मुख में छालों से झागदार लार का अधिक मात्रा में आना।

ये बीमारी कैसे फैलती है?

1. ये वायरस इन प्राणियों के उत्सर्जन व स्राव से फैलते हैं जैसे लार, दूध व जख्म से निकलने वाला द्रव।

2. ये वायरस एक स्थान से दूसरे स्थान पर हवा द्वारा फैलता है व जब हवा में नमी ज्यादा होती है तब इसका प्रभाव व प्रसार और तेजी से होता है।

3. ये बीमारी बीमार प्राणियों से स्वस्थ प्राणियों में भी फैलती है व इसका कारण होता है घूमने वाले जानवर जैसे श्वान, पक्षी व खेतों में काम करने वाले पशु आदि।

4. संक्रमित भेड़ व सूअर, इन बीमारियों के प्रसार में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

5. संकर नस्ल के मवेशी स्थानीय नस्ल के मवेशियों से जल्दी संक्रमण पाते हैं।

6. ये बीमारियां, पशुओं के एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन से भी फैलती है।

डॉ० सुरेन्द्र गोयल

इसके प्रभाव क्या है?

बीमार जानवर बीमारियों के प्रति, उर्वरता के प्रति संवेदनशील होते हैं। प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण उनमें बीमारियां जल्दी होती है व प्रजनन क्षमता घट जाती है।

प्रसार को कैसे रोका जाए?

1. स्वस्थ प्राणियों को संक्रमित क्षेत्रों में नहीं भेजा जाना चाहिये।

2. किसी भी संक्रमित क्षेत्र से जानवरों की खरीदारी नही की जानी चाहिये

3. नये खरीदे गए जानवरों को अन्य जानवरों से 21 दिन तक दूर रखना चाहिये

उपचार : बीमार जानवरों का मुख और पैर को 1 प्रतिशत पोटैशियम परमैंगनेट के घोल से धोया जाना चाहिये। इन जख्मों पर एन्टीसेप्टिक लोशन लगाया जा सकता है। बोरिक एसिड ग्लिसरिन पेस्ट को मुख में लगाया जा सकता है। बीमार प्राणियों को पथ्य आधारित आहार दिया जाना चाहिये व उन्हें स्वस्थ प्राणियों से अलग रखा जाना चाहिये।

टीकाकरण : सभी जानवरों को, जिन्हें संक्रमण की आशंका है, प्रति 6 माह में एफएमडी के टीके लगाए जाने चाहियें। ये टीकाकरण कार्यक्रम सभी पशुओं के लिये लागू है। बछड़ों को प्रथम टीकाकरण 4 माह की उम्र में दिया जाना चाहिये और दूसरा टीका 5 महीने की उम्र में। इसके साथ ही 4-6 माह में बूस्टर भी दिया जाना चाहिये।

बता दें कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र की अपनी एक उत्तम व अत्याधुनिक गोशाला है, जिसमें भारतीय नस्ल की 150 गाय तथा विदेशी लगभग 200 गाय हैं। गुरुकुल की गोशाला अपने आप में एक आदर्श गोशाला है जहाँ प्रतिदिन लगभग 12 क्विंटल दुग्ध-उत्पादन हो रहा है। गाय के दूध के साथ-साथ गौमूत्र व गोबर का सदुपयोग प्राकृतिक खेती में करने की आधुनिक सुविधाएँ व संसाधन भी उपलब्ध हैं। गायों के रहने की पूर्णत: वातानकूलित व्यवस्था है एवं स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाता है।

- डॉ. सुरेन्द्र गोयल, मुख्य चिकित्सक

श्री गोपाल कृष्ण गोशाला, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गिलोय : औषधि नहीं वरदान

गिलोय प्राय: सभी प्रान्तों के जंगल झाड़ियों में पायी जाती है। विशेषकर गरम क्षेत्रों में यह अधिक मात्रा में पायी जाती है। हमारे देश के देहरादून और सहारनपुर के जंगलों में गिलोय बहुत अधिक मिलती है।

इसकी बहुवर्षायु, चिकनी एवं मांसल लता बहुत विस्तार से वृक्षों पर फैल जाती है। पत्ते पान के समान होते हैं। इसके मूल था कांड का प्रयोग औषध के लिए किया जाता है। इसमें गन्ध नहीं होती किन्तु इसका स्वाद कड़वा होता है।

गुण और प्रयोग

गिलोय कड़वी, उष्ण, त्रिदोषध्न, रसायन, बल्य, ज्वर का हरण करने वाली, दीपन, मूत्रजनन तथा पित्तसारक होती है। इसका प्रयोग त्वचा के रोग, विषम ज्वर, कुण्ठ, वातरक्त, प्रमेह, मूत्रकृच्छ, कामला, मन्दाग्नि, वमन, तृषा, दाह, रक्तार्श एवं कृमि आदि अनेक रोगों में किया जाता है।

1) विषम ज्वर तथा जीर्ण ज्वर इसके क्वाथ से दूर हो जाता है। जीर्ण ज्वर में इसके क्वाथ अथवा स्वरस में छोटी पीपल व मधु मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

2) प्रमेह, नवीन सोजांक तथा अन्य मूत्र विकारों में इसका स्वरस अधिक मात्रा में दिया जाता है। गिलोय स्वरस का अधिक मात्रा प्रयोग करने से पेट भी साफ होता है।

3) गिलोय का सेवन करने से पित्त का स्राव ठीक होने लगता है। कुण्चन, पेट का दर्द तथा कामला में इसका उपयोग किया जाता है। कामला में इसका स्वरस मधु के साथ पिलाना चाहिए।

सुमित कुमार

4) त्वचा के रोगों की यह प्रधान औषधि है। इसके स्वरस को नीम या हल्दी एवं आंवला के साथ पीने से जलन, दाग व चकत्ते आदि अच्छे होते हैं।

5) वातरक्त में दूध के साथ सिद्ध किया हुआ इसका तेल लाभदायक माना जाता है।

6) बवासीर में इसका स्वरस या चूर्ण छाछ के साथ प्रयोग करने से लाभ होता है।

7) स्तन्यशुद्धि के लिए गिलोय का क्वाथ पिलाया जाता है।

8) रसायन रूप में इसका स्वरस मधु या गुड़ के साथ प्रयोग किया जाता है।

9) शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में भी गिलोय को बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसके इस्तेमाल से कई बीमारियों को दूर किया जा सकता है। गिलोय एंटी-ऑक्सीडेंटस होने के कारण शरीर को क्षति पहुंचाने वाले फ्री रेडिकल्स से लड़ने में भी कारगर है। सर्दी-जुकाम, बुखार, कफ, टौन्सिल जैसी समस्याओं को कम करने में भी गिलोय रामबाण साबित होती है।

अत: पाठकों से निवेदन है कि अपने-अपने घरों में अथवा अपने बगीचे में गिलोय को अवश्य जगह दें और इसके स्वरस या क्वाथ का नियमित सेवन करें ताकि आप और आपका परिवार विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचा रहे।

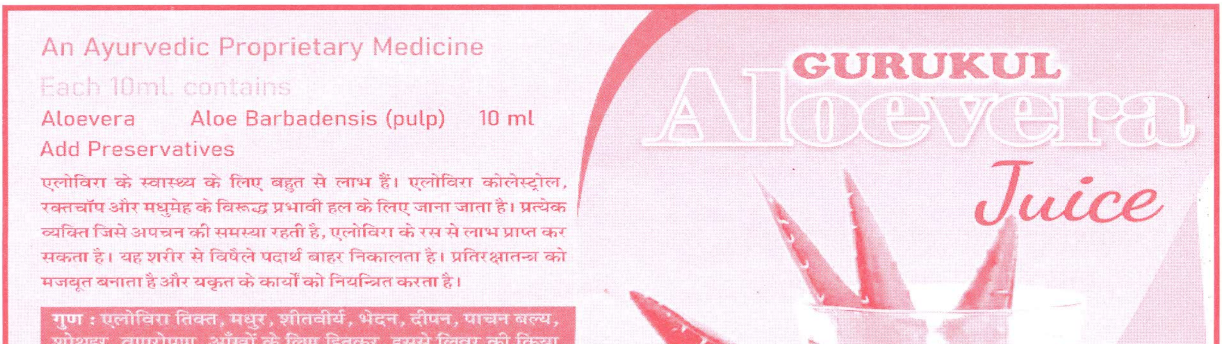

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार **10+2** तक का विद्यालय है जो **ISO 9001: 2015** प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरा **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है –

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा–व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे–बड़े छात्रों हेतु अलग–अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई–फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य–श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 282 गायें हैं जो प्रतिदिन 1150 लीटर दूध देती हैं।

अश्वारोहण (घुड़सवारी): इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

शूटिंग (निशानेबाजी प्रशिक्षण): इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे–बड़े छात्रों हेतु) : गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.): सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे : गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए आकर्षक संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा–व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी **'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस'** कोर्स भी कराया जाता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट–मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग का गठन किया गया। जिसके तहत लगभग डेढ़ दर्जन प्रचारक दिन–रात विभिन्न क्षेत्रों में घूम–घूम कर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र : लोगों को जहरमुक्त एवं रसायनमुक्त फल, सब्जियाँ व अन्न उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा **'प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र'** खोला गया है जहाँ पर गुरुकुल के सभी उत्पाद उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।

इनके अतिरिक्त **कम लागत प्राकृतिक कृषि फार्म, स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला** भी है। **आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र**, जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं **'गुरुकुल–दर्शन'** मासिक पत्रिका से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है।

सी.बी.एस.ई. की 12वीं परीक्षा में 90% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 82 विद्यार्थी

अभिनव गोयल 97.4% | राहुल केरला 97% | आर्यन 96.8% | अंकुर 96.8% | पारस राणा 96.4% | सतेन्द्र सिंह 96.4% | आशीष 96.2% | साहिल 96% | सौरभ 95.8%

रोहित जागलान 95.8% | रवि 95.8% | अनमोल पंवार 95.8% | अमन शर्मा 95.8% | वेद आर्य 95.6% | ईश्वर दत्त 95.6% | आर्यन 95.6% | अमन 95.4% | उत्सव कुमार 95.2%

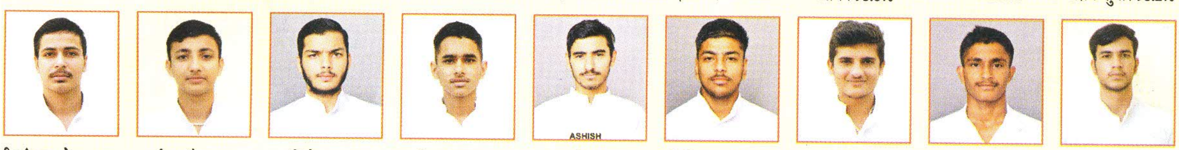

दीक्षांत कम्बोज 95.2% | आर्षमन गौड़ 95.2% | अभिषेक 95.2% | हरीश कुमार 95% | आशीष 95% | अभिषेक कुमार 94.8% | यशु चौधरी 94.6% | सिद्धार्थ कुमार 94.6% | श्रेय 94.6%

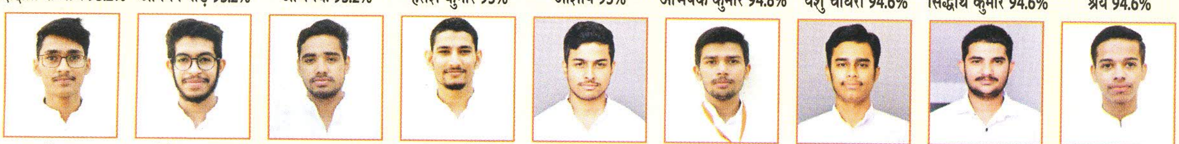

कुशमीत 94.6% | विवेक 94.4% | उज्ज्वल तोमर 94.4% | मन्दीप कुमार 94.4% | करन सिंह 94.4% | हैप्पी 94.4% | प्रणव 94.2% | लक्ष्य 94.2% | अमन कुमार 94.2%

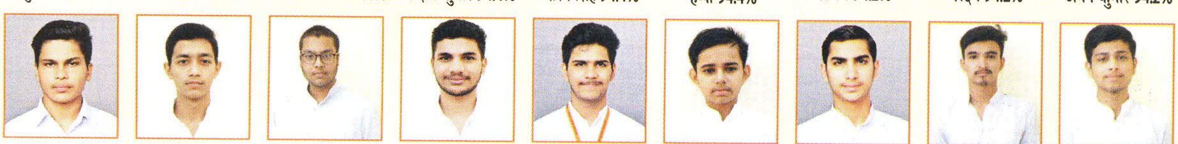

अक्षय 94.2% | पुलकित 94% | केशव 94% | धीरज 94% | अभय प्रताप 94% | आदित्य कौशिक 94% | अभिलक्ष चौधरी 93.8% | चिराग 93.8% | दिव्यम वर्मा 93.8%

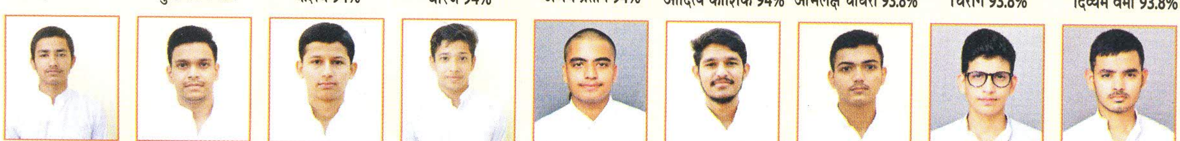

हर्ष 93.8% | प्रियांशु कश्यप 93.6% | अंकित 93.6% | शिवांश 93.6% | तुषार लखानी 93.6% | अमित कुमार 93.4% | कमल 93.2% | अमित तंवर 93.2% | अनूप 93.2%

चित्रेश 93% | मोहित 93% | सत्यम 92.8% | पार्थ सैनी 92.8% | निलेश 92.6% | जतिन शर्मा 92.6% | कुलविन्द्र 92.2% | अंश वर्मा 92.2% | विक्रांत 92%

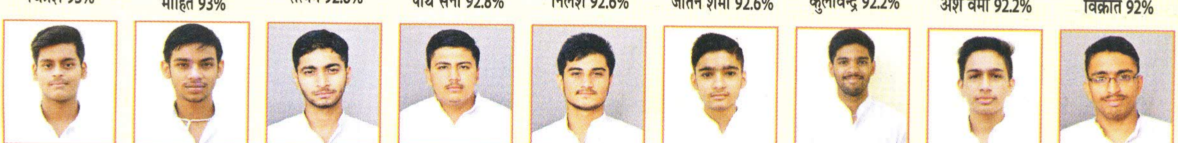

प्रणव 92% | निर्भय 91.8% | ऋतिक 91.8% | अमय अत्री 91.8% | सूर्यवंशी 91.6% | हिमांशु 91.6% | इशांक गुप्ता 91.6% | उज्ज्वल तोमर 91.2% | ऋषभ गर्ग 91.2%

आकाश अरोड़ा 91% | श्रुतायु सैनी 90.8% | अजय 90.8% | विमल 90.2% | योशवी शर्मा 90.4% | रोहित 90.4% | पवित्र तायल 90.4% | नितिन 90% | अभिषेक सिरोही 90% | जशन वालिया 90%

19 छात्रों ने N.D.A. की परीक्षा उत्तीर्ण कर गुरुकुल के गौरव को बढ़ाया

राहुल केरला | आर्यन | सतिन्द्र सिंह | रोहित जागलान | आर्यन बल्हारा | अर्शमान गौड़ | अभिषेक | अभिषेक कुमार | प्रणव | धीरज

पुलकित | प्रियांशु | तुषार | कमल | ऋतिक | योशवी वर्मा | अर्शदीप | हिरांश | राहुल कुमार

33 छात्रों ने JEE MAIN की परीक्षा उत्तीर्ण कर गुरुकुल के गौरव को बढ़ाया

हेमन्त | आर्यन | राहुल केरला | अभिषेक कुमार | अमन कुमार | अंगद सिंह | हैप्पी | मोहित डागर | नीलेश

सौरभ | अभिषेक | आशीष | सूर्यप्रताप | तुषार लखानी | अनमोल पंवार | अक्षय | ऋतिक | ऋषभ गर्ग

अनूप | सूर्यवंशी | रोहित जागलान | सतिन्द्र सिंह | जतिन शर्मा | मन्दीप कुमार | अभय प्रताप | प्रणव | यश

अमेय अत्री | नितिन | शुभम | आर्यन | आदित्य | पवित्र तायल

10वीं, 12वीं, एन.डी.ए. व जे.ई.ई. मेन्स की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सभी छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएं

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244
Postel Regn. No. HR / KKR / 181 / 2018-2020

स्वामी- गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री कुलवंत सिंह सैनी द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड, निकट डी.एन. कालेज, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र, (निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी), कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक -कुलवंत सिंह सैनी

मूल्य 15रु एक प्रति (150रु वार्षिक)

में